कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

Registered Postal Regn. No.MP/Bhopal/143/2025-27 RNI No. 1832/57 डाक प्रेषण का दिन - सोमवार, मंगलवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार भोपाल-जयपुर-रायपुर ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 भोपाल, प्रकाशन - सोमवार, 3 नवम्बर 2025 वर्ष-80 अंक - 10 मूल्य-रु. 12/- कुल पृष्ठ-16 www.krishakjagat.org पृष्ठ- 1

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

श्रेष्ठ कृषि पत्रकारिता के लिए भाकृअनुप ICAR चौधरी चरणसिंह अवार्ड से पुरस्कृत

अंदर पढ़िये... 6

हरे पत्तेदार सब्जियां उगाएं

रबी में उर्वरकों पर मिलेगी 38 हजार करोड़ की सब्सिडी

केन्द्रीय कैबिनेट का फैसला

नई दिल्ली (कृषक जगत)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने रबी सीजन 2025-26 (1 अक्टूबर 2025 से 31 मार्च 2026 तक) के लिए फॉस्फेटिक और पोटाशिक उर्वरकों पर पोषक तत्व आधारित सब्सिडी दरें तय करने के उर्वरक विभाग के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी। रबी सीजन 2025-26 के लिए अनुमानित बजटीय आवश्यकता लगभग 37,952.29 करोड़ रुपए होगी। यह खरीफ सीजन 2025 की बजटीय आवश्यकता से लगभग 736 करोड़ रुपए अधिक है।

डाई अमोनियम फॉस्फेट (डीएपी) और एनपीकेएस (नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, सल्फर) ग्रेड सहित पीएंडके उर्वरकों पर सब्सिडी रबी 2025-26 के लिए अनुमोदित दरों के आधार पर प्रदान की जाएगी ताकि किसानों को सस्ती कीमतों पर उर्वरकों की सुचारू उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके।

किसानों को लाभ : • किसानों को सब्सिडीयुक्त,किफायती और उचित मूल्य पर खाद मिलेगी।

मध्यप्रदेश स्थापना के 70 वर्ष

मध्यप्रदेश के 70वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रविंद्र भवन में विकसित मध्यप्रदेश @2047 दृष्टि पत्र का विमोचन किया और 'ई-सेवा नागरिक एप' का शुभारंभ कर डिजिटल मध्य प्रदेश की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया। इस अवसर पर केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री श्री के. राममोहन नायडू एवं प्रदेश के एमएसएमई मंत्री श्री चैतन्य काश्यप भी उपस्थित थे।

प्रदेश में बेमौसम बरसात से धान, मक्का को नुकसान की संभावना

कृषि, राजस्व विभाग ने किया आकलन

(अतुल सक्सेना)

भोपाल (कृषक जगत)। मध्य प्रदेश में बेमौसम बारिश ने किसानों की चिंता बढ़ा दी है। मौसम विभाग के अनुसार, पूर्व मध्य अरब सागर में सक्रिय एक चक्रवाती प्रणाली तथा चक्रवाती तूफान मोंथा की वजह से कई जिलों में लगातार बारिश हो रही है। दरअसल, खेतों में खड़ी धान की फसल की कटाई की जा रही है। ऐसे में आसमान से बरस रही बारिश ने किसान की मुसीबत बढ़ा दी और धान की कटाई को रोकना पड़ा है। बारिश की वजह से धान की फसल को काफी नुकसान पहुंचा है। अधिकतर जगह धान की फसल पक चुकी है। कुछ जगह कटाई भी हो गई है। वर्षा व हवाओं से धान की फसल खेत में ही गिरने से खराब होने की पूरी आशंका है। दाने काले पड़ने व फफूंद लगने का डर है। इसी तरह मक्का की फसल को भी नुकसान हुआ है। किसान संगठनों का दावा है कि प्रदेश भर में करोड़ों रुपये का नुकसान किसानों को होने की संभावना है। खरीफ में कुल 36 लाख हेक्टेयर में धान और 26 लाख हेक्टेयर में मक्का बोई गई है, खरीफ सीजन की फसलों को नुकसान तो हुआ ही रबी बोनी भी 15 दिन पिछड़ गई है। एक से 15 नवंबर के बीच बोनी का सबसे अच्छा समय माना जाता है, उड़द-मूंग और सोयाबीन की फसल को भी नुकसान हुआ है।

जानकारी के मुताबिक प्रदेश के सबसे अधिक धान उत्पादन करने वाले बालाघाट जिले में तीन लाख 11 हजार हेक्टेयर में धान की फसल लगाई है। बारिश से यहां 30 से 40 प्रतिशत धान के नुकसान की आशंका है। हालांकि कृषि विभाग इससे इंकार कर रहा है। सीधी जिले में 40 प्रतिशत धान पकने की स्थिति में है। आगे वर्षा हुई तो फसल को नुकसान होगा। शहडोल में एक लाख 42 हजार हेक्टेयर में धान की खेती वर्षा से 40 प्रतिशत फसल खराब होने की स्थिति में है। उड़द, सोयाबीन, तिल 70 प्रतिशत तक खराब होने की संभावना है।

विदिशा, रायसेन, बैतूल और सीहोर में धान की पकी फसल वर्षा की वजह से भारी होकर आड़ी हो चुकी है। उनके दाने भी बिखर गए हैं। बैतूल में धान के खेतों में पानी भर गया है, जिससे कटाई में भी देरी होगी। किसानों का कहना है कि गीले दाने काले पड़ सकते हैं। रायसेन में दो लाख हेक्टेयर और विदिशा में 80 हजार हेक्टेयर में धान बोया गया था, जिसमें से 30 हजार हेक्टेयर की कटाई हो चुकी है। राजस्व एवं कृषि विभाग की टीम सर्वे

कर नुकसान दर्ज कर रही है।

श्योपुर जिले के बड़ौदा, श्योपुर और कराहल में धान की फसल प्रभावित हुई। जिला प्रशासन ने नुकसान का सर्वे करने के आदेश दिए हैं। शिवपुरी में 5 से 6 हजार हेक्टेयर में धान प्रभावित हुई है। यहां अधिक नुकसान नरवर, कोलारस आदि क्षेत्रों में धान की फसल को हुआ है। जानकारी के मुताबिक राजस्व एवं कृषि विभाग की टीम सर्वे कर नुकसान दर्ज कर रही है। किसानों का कहना है कि यदि अगले एक-दो दिन में मौसम सामान्य नहीं होता तो फसल की कटाई में काफी देरी होगी। इससे न केवल पैदावार पर असर पड़ेगा, बल्कि कटाई की लागत भी बढ़ सकती है।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

मध्य प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा, महाराष्ट्र में होगी 15095 करोड़ की दलहन-तिलहन खरीदी

केंद्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान ने खरीफ 2025-26 के लिए दी मंजूरी

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने खरीफ सीजन 2025-26 के लिए तेलंगाना, ओडिशा, महाराष्ट्र तथा मध्य प्रदेश में दालों एवं तिलहनों की खरीदी योजनाओं को मंजूरी दी है। इन राज्यों के लिए स्वीकृत कुल खरीद राशि रु. 15095.83 करोड़ है, जिससे संबंधित राज्यों के लाखों किसानों को व्यापक लाभ मिलेगा। इन राज्यों के कृषि मंत्रियों और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ उच्चस्तरीय वर्चुअल बैठक में केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह ने प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान सहित कृषि की योजनाओं के तहत ये स्वीकृतियां प्रदान कीं।

बैठक में चर्चा के बाद केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि मध्य प्रदेश में खरीफ 2025-26 के दौरान सोयाबीन की 22,21,632 मीट्रिक टन की मूल्य अंतर भुगतान योजना के तहत लागू होगी, जिसके लिए रु. 1,775.53 करोड़ के वित्तीय प्रभाव की स्वीकृति केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने दी।

तेलंगाना में मूंग की कुल 4,430 मीट्रिक टन खरीद मूल्य समर्थन योजना के तहत रु. 38.44 करोड़ की स्वीकृति दी। उड़द की शत-प्रतिशत खरीद होगी, वहीं सोयाबीन की 25 प्रतिशत खरीद की स्वीकृति दी गई है। इसी प्रकार, ओडिशा राज्य में अरहर की 18,470 मीट्रिक टन (राज्य उत्पादन का 100%) खरीद को PSS के तहत रु. 147.76 करोड़ के बजट के साथ मंजूरी दी है।

महाराष्ट्र में केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह ने मूंग की 33,000 मीट्रिक टन, उड़द की 3,25,680 मीट्रिक टन और सोयाबीन की 18,50,700 मीट्रिक टन कुल मात्रा को PSS के अंतर्गत क्रमशः रु. 89.34 करोड़, रु. 2540.30 करोड़ और रु. 9,860.53 करोड़ की कुल लागत पर मंजूरी दी है।

श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि ये मंजूरियां इसलिए दी गई हैं ताकि किसानों को उनकी फसल पर बेहतर लाभ मिल सके।

कृषि क्षेत्र में प्रगति की समीक्षा

केंद्रीय कृषि मंत्री ने प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में केंद्रीय कैबिनेट द्वारा खाद सब्सिडी के लिए 38 हजार करोड़ रुपये जारी करने के फैसले पर किसानों की ओर से आभार व्यक्त किया। श्री चौहान की अध्यक्षता में आयोजित समीक्षा बैठक में बताया गया कि खरीफ-2025 के दौरान फसलों की बुवाई काफी अच्छी हुई है। खरीफ-2025 के लिए धान की बुवाई का कुल आंकड़ा 441.58 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है, जो पिछले वर्ष की अपेक्षा अधिक है। वहीं, तिलहनी फसलों का अखिल भारतीय क्षेत्र 190.13 लाख हेक्टेयर तक दर्ज किया गया, जिसमें सोयाबीन एवं मूंगफली प्रमुख हैं। इसी तरह, दालों का क्षेत्र 120.41 लाख हेक्टेयर तक पहुंचा है, जो पोषण सुरक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धि है, वहीं गन्ने का क्षेत्र 59.07 लाख हेक्टेयर तक रहा हैं, जिससे गन्ना उत्पादक किसानो को सीधा फायदा होगा।

केंद्रीय कृषि मंत्री ने कहा कि आगामी रबी मौसम में दलहनी और तिलहनी फसलों की ज्यादा बुवाई के लिए और रिकॉर्ड उत्पादकता प्राप्त करने के लिए केंद्र सरकार, प्रदेशों के साथ मिलकर हरसंभव सहायता किसानों को उपलब्ध कराएगी।

बैठक में कृषि आयुक्त डॉ. पी.के. सिंह ने केंद्रीय कृषि मंत्री को बताया कि देशभर में सिंचाई परियोजनाओं एवं जलाशयों के लिए जल उपलब्धता में वृद्धि हुई हैं, जिससे सिंचाई आधारित कृषि क्षेत्रों में भी कृषि विकास संभव हुआ है।

छोटे किसानों तक पहुंचे अच्छी क्वालिटी के बीज

केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने, नई दिल्ली में राष्ट्रीय बीज निगम (NSC) के नव-स्थापित अत्याधुनिक सब्जी एवं पुष्प बीज प्रसंस्करण संयंत्र और पैकिंग इकाई का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने बरेली, धारवाड़, हसन, सूरतगढ़ और रायचूर स्थित एनएससी के पांच बीज प्रसंस्करण संयंत्रों का वर्चुअल उद्घाटन भी किया।

पूसा, नई दिल्ली स्थित बीज भवन में स्थापित सब्जी बीज प्रसंस्करण संयंत्र की क्षमता 1 टन प्रति घंटा है, जबकि एनएससी के अन्य पांचों संयंत्रों की क्षमता 4 टन प्रति घंटा रखी गई है। ये संयंत्र अत्याधुनिक तकनीक से सुसज्जित हैं, जिससे किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले बीजों की उपलब्धता सुनिश्चित होगी और बीज उत्पादन की गुणवत्ता में वृद्धि होगी।

कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि सचिव डॉ. देवेश चतुर्वेदी, NSC की CMD और मंत्रालय की अतिरिक्त सचिव मनिंदर कौर द्विवेदी, संयुक्त सचिव श्री अजीत कुमार साहू सहित NSC तथा कृषि मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

लाल चंदन की खेती करने वाले 18 किसानों को मिले 55 लाख

राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण ने जारी की राशि

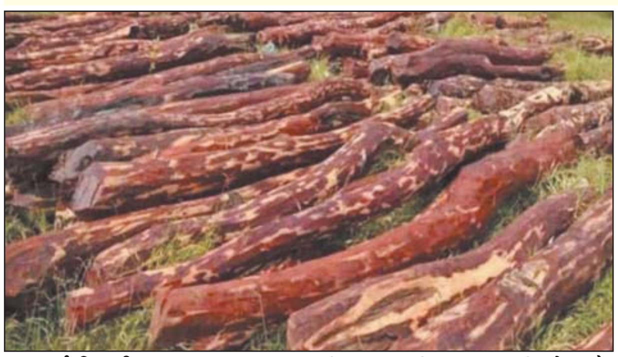

नई दिल्ली (कृषक जगत)। राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण (एनबीए) ने राज्य जैव विविधता बोर्ड के माध्यम से तमिलनाडु में लाल चंदन (प्टेरोकार्पस सैंटालिनस) के 18 कृषकों को 55 लाख रुपये जारी किए हैं। ऐसा भारत के जैविक संसाधनों के निरंतर उपयोग को बढ़ावा देने के लिए पहुंच और लाभ साझाकरण (एबीएस) ढांचे के तहत किया गया। ये किसान तिरुवल्लूर जिले के कन्नभिरन नगर, कोथुर, वेम्बेडु, सिरुनीयुम, गुनीपलायम, अम्मामबक्कम, अलीकुझी और थिम्माबूपोला पुरम नामक 8 गांवों के निवासी हैं।

एनबीए ने 2015 में लाल चंदन पर एक विशेषज्ञ समिति गठित की थी जिसकी सिफारिश पर किसानों को 55 लाख रुपये जारी किए गए है। समिति ने 'लाल चंदन के उपयोग से उत्पन्न संरक्षण, सतत उपयोग और उचित एवं न्यायसंगत लाभ बंटवारे की नीति' शीर्षक से एक व्यापक रिपोर्ट तैयार की। समिति की सिफारिशों का एक प्रमुख परिणाम विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) द्वारा 2019 में नीतिगत छूट देना था, जिससे खेती वाले स्रोतों से लाल चंदन के निर्यात की अनुमति मिल गई। यह कृषि-आधारित संरक्षण और व्यापार को एक महत्वपूर्ण बढ़ावा है।

लाल चंदन पूर्वी घाटों की एक स्थानिक प्रजाति है, जो केवल आंध्र प्रदेश में पाई जाती है। इसका पारिस्थितिक, आर्थिक और सांस्कृतिक महत्व है। इसकी खेती आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, ओडिशा और अन्य राज्यों में भी की जाती है।

आगरा में बनेगा सी-सार्क केंद्र

आलू उत्पादन और निर्यात को मिलेगी नई उड़ान

नई दिल्ली (कृषक जगत)। कृषि सचिव डॉ. देवेश चतुर्वेदी की अध्यक्षता में अंतरराष्ट्रीय आलू केंद्र (CIP) के महानिदेशक श्री साइमन हेक और प्रस्तावित सी-सार्क - इंटरनेशनल पोटैटो सेंटर - (साउथ एशिया रीजनल सेंटर) की समन्वय समिति के अन्य सदस्यों की पहली बैठक आयोजित हुई।

बैठक में केंद्र की कार्ययोजना और संदर्भ शर्तों के अनुसार भविष्य की रूपरेखा पर विस्तार से चर्चा की गई।

आगरा में स्थापित होने जा रहा यह केंद्र भारत को आलू और शकरकंद के उत्पादन, प्रसंस्करण और निर्यात के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व प्रदान करेगा। इसके माध्यम से कृषि उत्पादकता बढ़ाने, उत्पाद की गुणवत्ता को अंतरराष्ट्रीय मानकों तक पहुँचाने, निर्यात में वृद्धि करने तथा नए रोजगार अवसर सृजित करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति होगी।

सी-सार्क केंद्र आत्मनिर्भर भारत के विजन को सशक्त करेगा और किसानों को आधुनिक तकनीक, अनुसंधान तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग से लाभान्वित करेगा।

शहरों के आसपास सब्जी क्लस्टर विकसित होंगे

उद्यानिकी विभाग देगा 40 प्रतिशत तक अनुदान

भोपाल (कृषक जगत)। प्रदेश में बढ़ते शहरीकरण में स्वास्थ्य जागरुकता और पोषणयुक्त आहार की मांग को ध्यान में रखते हुए बड़े शहरों के आसपास देशी-सब्जियों की उन्नत किस्म के क्लस्टर विकसित किए जाएंगे। राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत देशी-सब्जियों को स्थानीय जलवायु परिस्थितियों के अनुसार उत्पादन प्रोत्साहन का काम उद्यानिकी विभाग द्वारा किया जा रहा है। यह जानकारी नवनियुक्त आयुक्त सह-संचालक उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण श्री अरविन्द कुमार दुबे ने दी। श्री दुबे अपर सचिव मुख्यमंत्री तथा प्रबंध संचालक राज्य कृषि उद्योग विकास निगम भी हैं।

नवनियुक्त आयुक्त उद्यानिकी श्री अरविन्द दुबे ने बताया कि राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत शहरी क्षेत्र के आसपास देशी सब्जियों की नई एवं उन्नत किस्म के उत्पादन को प्रोत्साहित किया जाना आवश्यक है। विभाग द्वारा सभी 10 संभागों के जिलों के नगरीय क्षेत्र के आसपास परंपरागत सब्जियों की नवीन उन्नत किस्म को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसमें तोरई/गिलकी, परवल, चिचिंडा, लौकी, करेला, टिंडा, खीरा, बैंगन, मुनगा, कुंदरु, चौलाई, पालक, पोई साग, गरूणी/भाजी, कचरी, अरबी, शकरकंद, कसावड़ तथा कटुक/स्टार गूसबेरी सब्जी फसलों के उत्पादन पर अनुदान सहायता दी जा रही है। इस योजना का लाभ लेने के लिए सब्जी उत्पादकों को एमपी एफएसटीएस पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन करना होता है। परियोजना के तहत हितग्राहियों को प्रति हेक्टेयर निर्धारित इकाई लागत 60 हजार प्रति हेक्टेयर पर 40 प्रतिशत 24 हजार रुपए तक अनुदान दिया जाता है। आयुक्त श्री दुबे ने बताया कि योजना से जुड़ने के लिए कृषक के पास स्वयं की भूमि और सिंचाई सुविधा होना चाहिए।

श्रीमती मैथिल ट्रायफेड की डिप्टी जनरल मैनेजर बनीं

राज्य शासन ने 2009 बैच की आईएएस अधिकारी आयुक्त उद्यानिकी श्रीमती प्रीति मैथिल की सेवाएं केन्द्र को प्रतिनियुक्ति पर सौंपी हैं। उन्हें डिप्टी जनरल मैनेजर ट्राइबल को-ऑपरेटिव मार्केटिंग डेवलपमेंट फेडरेशन ऑफ इंडिया (ट्रायफेड) के म.प्र. रीजन के पद पर पदस्थ किया गया है।

अब तक 20 लाख हेक्टेयर से अधिक में हुई रबी बोनी

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल (कृषक जगत)। चालू रबी सीजन 2025-26 में अब तक 20 लाख 22 हजार हेक्टेयर में बोनी हो गई है। जबकि गत वर्ष इस अवधि में 14.75 लाख हेक्टेयर में बोनी हुई थी। राज्य की प्रमुख फसल गेहूं की बोनी अब तक 8.37 लाख हेक्टेयर में हो गई है। इस वर्ष रबी फसलों का लक्ष्य 138.85 लाख हेक्टेयर रखा गया है। अब तक लक्ष्य के विरुद्ध कुल रबी बोनी 14 फीसदी पूरी हो गई है।

कृषि विभाग के मुताबिक अब तक 20.22 लाख हेक्टेयर में बोनी कर ली गई है। इसमें राज्य की प्रमुख रबी फसल गेहूं की बोनी 8.37 लाख हेक्टेयर में हुई है। जबकि गत वर्ष अब तक 2.66 लाख हे. में गेहूं बोया गया था। दूसरी प्रमुख फसल चने की बोनी अब तक 2.85 लाख हेक्टेयर में हो गई है जो गत वर्ष समान अवधि में 3.31 लाख हे. में हुई थी। अन्य फसलों में अब तक मटर 1.13 लाख हे. में, मसूर 1.89 लाख हे. में बोई गई है। राज्य की प्रमुख तिलहनी फसल सरसों की बोनी 5.77 लाख हे. में हुई है जबकि इस वर्ष 12.23 लाख हे. लक्ष्य रखा गया है।

रबी फसलों की बुवाई
31 अक्टूबर 2025 तक (लाख हे. में)

फसल	लक्ष्य	बुवाई
गेहूं	96.81	8.37
जौ	0.34	0.02
चना	17.28	2.85
मटर	3.30	1.13
मसूर	6.36	1.89
सरसों	12.23	5.77
अलसी	1.20	0.18
गन्ना	1.33	0.00

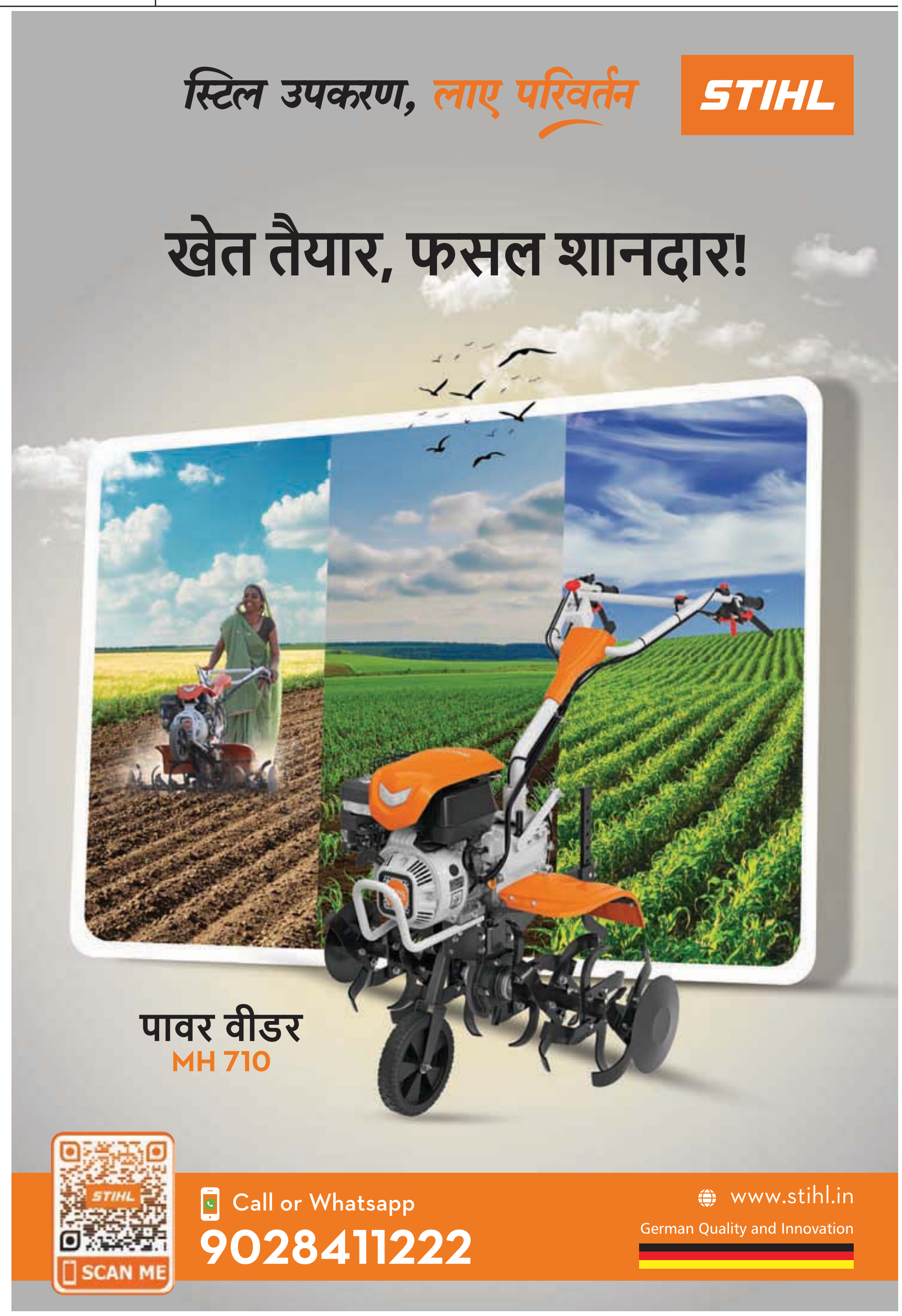

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक **विजय कुमार बोन्द्रिया** द्वारा 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल से प्रकाशित एवं कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, भोपाल (मध्य प्रदेश) से मुद्रित, **सम्पादक : सुनील गंगराड़े,** फोन : 0755-4248100, 2554864, फैक्स : 0755-2571449. E-mail-info@krishakjagat.org इस अंक का मूल्य रु. 12/- वार्षिक शुल्क रु. 600/-.भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक कार्यालय का पंजीयन क्रमांक 1832/57

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

मित्रता और शत्रुता के भाव तो बादलों के समान क्षण-क्षण बदलते रहते हैं। - महाभारत

कृषि ऋण: राजनीति के कुचक्र में फंसे किसान !

महाराष्ट्र में पिछले महीने हजारों किसानों ने कर्जमाफी, न्यूनतम समर्थन मूल्य और अन्य मांगों को लेकर राष्ट्रीय राजमार्ग पर प्रदर्शन किया। करीब 30 किलोमीटर लंबे जाम के बाद यह आंदोलन मुम्बई उच्च न्यायालय के हस्तक्षेप पर स्थगित हुआ। बताया जाता है कि जून 2025 तक राज्य के किसानों पर करीब रु. 37,000 करोड़ का कृषि ऋण बकाया था। एन.डी.ए. ने विधानसभा चुनाव में किसानों का ऋण माफ करने का वादा किया था, लेकिन समय पर पालन न होने से किसान असंतोष में हैं।

इधर मध्यप्रदेश में भी करीब साढ़े चार लाख किसानों को ऋण नहीं चुका पाने पर डिफाल्टर घोषित कर दिया गया है, जिसके कारण उन्हें सहकारी समितियों से खाद नहीं मिल रही। रबी की बुआई के समय यह निर्णय किसानों के लिए गंभीर संकट बन सकता है।

दरअसल, किसानों की इस दशा के लिए राजनीतिक दल काफी हद तक जिम्मेदार हैं। चुनावों के समय सभी दल कर्जमाफी और नकद हस्तांतरण जैसी घोषणाओं से मतदाताओं को लुभाते हैं, पर सत्ता में आने के बाद वादे निभाने में चूक जाते हैं। महाराष्ट्र का हालिया आंदोलन इसी प्रवृत्ति का परिणाम है।

कर्जमाफी की राजनीति ने किसानों में भी गलत प्रवृत्ति पैदा की है। अब वे यह मानकर चलने लगे हैं कि चुनावों के बाद ऋण माफ

हो जाएगा, इसलिए समय पर भुगतान की जरूरत नहीं। इस सोच ने सहकारी बैंकों की वित्तीय स्थिति को भी कमजोर किया है। परिणामस्वरूप सरकारों पर कर्ज का बोझ बढ़ता जा रहा है, और अंततः इसका असर आम जनता पर पड़ता है।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि जैसी योजनाओं से किसानों को कुछ राहत जरूर मिलती है, लेकिन बढ़ती लागत, खाद-बीज की महंगाई और अनियमित मौसम के सामने यह सहायता नगण्य है। किसान आज भी प्राकृतिक आपदाओं और बाजार की अस्थिरता के बीच जूझ रहा है।

तीन दशक पहले तक किसान ऋण समय पर चुका देते थे, पर जबसे राजनीतिक दलों ने कर्जमाफी को चुनावी हथियार बनाया है, तबसे भुगतान अनुशासन टूट गया है। यह प्रवृत्ति न केवल कृषि अर्थव्यवस्था को कमजोर कर रही है बल्कि किसानों को आत्मनिर्भर बनने से भी रोक रही है।

समस्या का समाधान चुनावी वादों में नहीं, बल्कि दीर्घकालिक नीतिगत सुधारों में है। किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य मिले, न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम दाम पर बिक्री न हो, प्रसंस्करण उद्योग को प्रोत्साहन मिले और कृषि अधोसंरचना — पानी, बिजली, खाद, बीज जैसी मूलभूत सुविधाएं सुदृढ़ की जाएं।

राजनीतिक दलों को चाहिए कि वे मतदाताओं को केवल प्रलोभन न दें, बल्कि वादों को समयबद्ध तरीके से पूरा करें। किसान को राहत की नहीं, विश्वास और स्थिरता की जरूरत है। जब तक राजनीति कर्जमाफी की जगह उत्पादन और मूल्य सुधार को प्राथमिकता नहीं देगी, तब तक किसान इस कुचक्र में फंसा ही रहेगा।

खेतों में महिलाओं का अदृश्य श्रम और मान्यता की लड़ाई

• निलेश देसाई

भारत की कृषि अर्थव्यवस्था को अक्सर 'अन्नदाता पुरुष किसान' के रूप में देखा जाता है। खेतों की तस्वीरों में हल चलाते या मंडी में सौदा करते पुरुष दिखते हैं, परंतु इस दृश्य के पीछे वह श्रम है जो दिखाई नहीं देता—महिलाओं का। वे खेत में बीज डालती हैं, पौध रोपती हैं, निराई-गुड़ाई करती हैं, फसल काटती हैं, मवेशियों की देखभाल करती हैं और घर की रसोई तक अनाज पहुंचाती हैं। फिर भी, न तो उन्हें किसान कहा जाता है, न नीति में वह स्थान मिलता है जिसकी वे अधिकारी हैं। भारत में कृषि जनगणना (2015-16) बताती है कि कुल कृषि श्रम का लगभग 73 प्रतिशत कार्य महिलाएं करती हैं, लेकिन ज़मीन के स्वामित्व में उनका हिस्सा केवल 13 प्रतिशत है। यह असमानता केवल आंकड़ों में नहीं, बल्कि पहचान के संकट में है—वे किसान हैं, पर 'किसान' नहीं कहलातीं।

झाबुआ जैसे आदिवासी इलाकों में यह स्थिति और गहराई से महसूस होती है। संपर्क संस्था के लंबे अनुभव बताते हैं कि महिलाएं खेती की हर प्रक्रिया में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। वे ही बीजों का चयन और संरक्षण करती हैं, पौधों की रोपाई, निराई-गुड़ाई, जैविक खाद की तैयारी, फसल कटाई और पशुपालन तक हर काम संभालती हैं। इन कार्यों में उनका पारंपरिक ज्ञान, मौसमी समझ और बारीकी से जुड़ी मेहनत ही स्थानीय खेती को टिकाऊ बनाए रखती है। विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों में महिलाएं खेत और घर के बीच पुल की तरह हैं—एक ओर वे उत्पादन में लगी हैं, दूसरी ओर घर की खाद्य सुरक्षा और पोषण की जिम्मेदारी भी उन्हीं पर है।

महिला खेत पाठशालाएं

संपर्क संस्था द्वारा संचालित कई गांवों में जब 'महिला खेत पाठशालाएं' शुरू की गईं, तो यह पहली बार सामने आया कि महिलाएं कितनी गहरी कृषि समझ रखती हैं। मिट्टी परीक्षण, देसी बीजों की पहचान, गोमूत्र और नीम से जैविक घोल तैयार करने की विधियां—ये सब वे सहज रूप से जानती थीं। परंतु

जब प्रशिक्षण या योजना की बात आती थी, तो सरकारी अभिलेखों में किसान के रूप में केवल पुरुष का नाम दर्ज होता था। परिणामस्वरूप महिलाएं कृषि ऋण, फसल बीमा या किसान क्रेडिट कार्ड जैसी सुविधाओं से वंचित रह जाती थीं।

झाबुआ में कई बार यह भी देखा गया कि जब सूखा या बेमौसमी वर्षा ने फसल को नुकसान पहुंचाया, तो महिलाओं ने ही वैकल्पिक आजीविका के उपाय खोजे—सब्जी बाड़ी, बकरी पालन, या देसी बीजों का आदान-प्रदान। संपर्क संस्था द्वारा संचालित 'पशु सखी' कार्यक्रम में दर्जनों महिलाएं प्रशिक्षित होकर न केवल अपने गांव में पशु स्वास्थ्य की सेवा दे रही हैं, बल्कि अतिरिक्त आमदनी भी अर्जित कर रही हैं। इससे यह सिद्ध हुआ कि जब महिलाओं को निर्णय का अधिकार और तकनीकी सहयोग मिलता है, तो वे न केवल उत्पादन बढ़ाती हैं बल्कि पूरे समुदाय की आर्थिक स्थिरता को भी मजबूत करती हैं।

खेतों में बीज से लेकर फसल तक का अधिकांश कार्य महिलाएं करती हैं, परंतु पहचान और नीति में वे अब भी हाशिए पर हैं। झाबुआ जैसे इलाकों में उनके श्रम, पारंपरिक ज्ञान और नेतृत्व ने यह सिद्ध किया है कि टिकाऊ कृषि का भविष्य महिला किसानों के हाथों में है।

देसी बीज बैंक

जलवायु परिवर्तन के दौर में यह भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है। जब वर्षा चक्र अनिश्चित हो रहे हैं, जलस्रोत सूख रहे हैं, और मिट्टी की उर्वरता घट रही है, तब महिलाएं अपने अनुभव और पारंपरिक ज्ञान से अनुकूलन (adaptation) के नए रास्ते खोज रही हैं। झाबुआ के कुछ गांवों में महिलाओं ने सामूहिक रूप से देसी बीज बैंक बनाए हैं, स्थानीय फसलों की मिश्रित खेती शुरू की है और खेतों में जल संरक्षण के लिए छोटे-छोटे गड्ढे और बोरी बंधान तैयार किए हैं। यह कार्य संपर्क संस्था के मार्गदर्शन में हुआ है, पर असली नेतृत्व गांव की महिलाओं ने ही निभाया है। उनके अनुसार 'जल और बीज दोनों को बचाना ही आने वाले समय में खेती को बचाना है।'

कृषि नीति के स्तर पर देखें तो महिला किसानों की पहचान अभी भी अधूरी है। भूमि का स्वामित्व प्रायः पुरुषों के नाम पर होता है, जिससे महिलाएं 'सहायक' के रूप में देखी जाती हैं, 'निर्णयकर्ता' के रूप में नहीं। संपर्क के अनुभव बताते हैं कि जहां-जहां भूमि का संयुक्त स्वामित्व (joint title) पति-पत्नी के नाम पर हुआ, वहां महिलाओं की भागीदारी निर्णयों में स्पष्ट रूप से बढ़ी है। वे न केवल तकनीकी सलाह लेती हैं, बल्कि बाजार से सौदे भी खुद तय करने लगी हैं। यह आत्मविश्वास केवल अधिकार से आता है।

महिला किसानों को नीति, योजना और संसाधनों में बराबर की हिस्सेदारी हो

नीतियों में भी अब यह मान्यता दी जानी चाहिए कि किसान केवल वह नहीं जो हल चलाता है, बल्कि वह भी जो मिट्टी की नमी, बीज की पहचान, पशु की सेहत और घर की थाली—सबके बीच संतुलन बनाए रखता है। किसान एक प्रक्रिया है, और इस प्रक्रिया का आधा हिस्सा महिलाएं निभा रही हैं। यदि हम टिकाऊ और न्यायपूर्ण कृषि की दिशा में बढ़ना चाहते हैं, तो महिला किसानों को नीति, योजना और संसाधनों में बराबर की हिस्सेदारी देना अनिवार्य है।

झाबुआ के अनुभव यह भी बताते हैं कि जब महिलाएं संगठित होती हैं, तो केवल खेत ही नहीं, पूरा समुदाय बदलता है। महिला किसान समूहों ने न केवल अपनी खेती सुधारी, बल्कि गांवों में बच्चों की शिक्षा, पोषण और स्वच्छता के मुद्दों पर भी सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने सिद्ध किया कि 'कृषि' केवल उत्पादन नहीं, बल्कि जीवन जीने की सामूहिक प्रक्रिया है।

भारत के खेतों में हर उगती फसल, हर बोया बीज किसी न किसी महिला के हाथों से जुड़ा है। फिर भी जब नीतियां बनती हैं, तो उनका नाम सूचियों में नहीं होता। अब समय है कि यह अदृश्यता समाप्त हो। खेत की आधी आबादी को नीति में आधी हिस्सेदारी मिलनी चाहिए। जब महिलाएं किसान के रूप में पहचानी जाएंगी, तभी भारतीय कृषि सचमुच 'समानता, स्थायित्व और सम्मान' की दिशा में आगे बढ़ेगी।

(सप्रेस)

फॉस्फेट समृद्ध जैविक खाद (प्रोम) का उत्पादन एवं प्रयोग -2

कृषि उत्पादन में प्रोम खाद की उपयोगिता

- अनिल कुमार सिंह • सिद्धार्थ नायक
- अक्षता तोमर • ऋचा सिंह
- दिनेश कुमार सिंह • रश्मि शुक्ला

कृषि विज्ञान केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
email :aksjnkvv01@gmail.com

पिछले दो दशकों से, जैविक खेती में फॉस्फेट रिच आर्गेनिक मैन्योर (फॉस्फेट युक्त जैविक खाद-प्रोम) का उपयोग शामिल है, जो डीएपी, एमएपी, एसएसपी और नाइट्रोफॉस्फेट जैसे कृत्रिम रासायनिक उर्वरकों से प्रतिस्पर्धा कर रहा है। फॉस्फेट युक्त जैविक खाद उच्च-श्रेणी रॉक फॉस्फेट (32 प्रतिशत पी2ओ5, 2 प्रतिशत कम अथवा अधिक) को बहुत बारीक मात्रा में मिलाकर बनाई जाती है। फॉस्फेट रन्न अयस्क को वर्मीकम्पोस्ट या अवायवीय पाचक अपमार्जक (बायोगैस इकाइयों से निकलने वाली स्लरी) जैसे जैविक खाद की उपस्थिति में बैसिलस मेगाथेरियम, वैरफॉस्फेटिक (फॉस्फेट घुलनशील जीवाणु) और एजोटोबैक्टर (नाइट्रोजन स्थिरीकरण जीवाणु) के सूक्ष्मजीव संवर्धन का उपयोग करके उपयोगी फॉस्फेट में जैव-रूपांतरित करके फॉस्फेट युक्त जैव उर्वरक तैयार किया जा सकता है। यह एक प्रकार का उर्वरक है जिसका उपयोग सिंगल सुपरफॉस्फेट और डायमोनियम फॉस्फेट (डीएपी) के विकल्प के रूप में किया जाता है। सभी पौधों को फास्फोरस की आवश्यकता होती है, लेकिन चूँकि मिट्टी में फास्फोरस का स्तर कम होता है, यह कृषि के लिए एक चुनौती प्रस्तुत करता है। कृषि उत्पादन के लिए आदर्श व्यापक पादप वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए फास्फोरस को मिट्टी में खासकर कूंडों में प्रदान किया जाना चाहिए। इसकी घुलनशीलता मिट्टी के पीएच, आसपास के वातावरण और उसमें मौजूद जीवाणुओं से प्रभावित होती है।

प्रोम के प्रयोग के लाभ

- प्रोम धीमी गति से मुक्त होने वाली खाद है, जो सिंगल सुपर फॉस्फेट (एसएसपी), डायमोनियम फॉस्फेट (डीएपी) या मोनोअमोनियम फॉस्फेट (एमएपी) जैसे सिंथेटिक उर्वरकों की तुलना में खेती में अधिक प्रभावी है।
- चूँकि कच्चा रॉक फॉस्फेट अयस्क जैव रासायनिक रूप से घुलनशील फॉस्फेट में परिवर्तित हो जाता है, इसलिए पौधों को सीधे इससे पोषण मिल सकता है।
- इसमें तीन प्रमुख पोषक तत्व होते हैं -अ). फॉस्फ़ेरस, ब). जीवांश कार्बन, स). नाइट्रोजन।
- प्राथमिक पोषक तत्वों के साथ-साथ तांबा, जस्ता और बोरॉन जैसे सूक्ष्म पोषक तत्व प्रदान करता है।
- डीएपी के विकल्प के रूप में कार्य करता है और मिट्टी को लंबे समय तक पोषक तत्वों से भरपूर और पौष्टिक बनाता है।
- उपचारित क्षेत्र में बोई गई अन्य फसलों को भी उतनी ही कुशलता से फास्फोरस की आपूर्ति करता है जितनी कि पहली फसल को।
- उच्च उपज और बेहतर गुणवत्ता वाला उत्पादन प्राप्त होता है।
- मिट्टी की संरचना, सांध्रता जैसे मिट्टी के भौतिक गुणों में सुधार करता है और मिट्टी के कणों को समग्र सांध्रता में बाँधता है।

फॉस्फेट युक्त जैविक खाद का संगठन

घटक	मात्रा
नमी प्रतिशत-भार के अनुसार	25.0 (अधिकतम)
कण आकार (4.0 मिमी छलनी से गुजरने पर)	90 प्रतिशत (न्यूनतम)
बल्क डेंसिटी (ग्राम/क्यूबिक सेमी)	1.0 से कम
कुल जीवांश कार्बन	7.9 प्रतिशत
कुल नाइट्रोजन भार के अनुसार	0.4 प्रतिशत (न्यूनतम)
कुल फॉस्फेट (पी2ओ5) प्रतिशत-भार के अनुसार	10.4 प्रतिशत (न्यूनतम)
कार्बन: नाइट्रोजन अनुपात	20:1 से कम
पीएच मान (1:5 घोल)	6.7 (अधिकतम)
विद्युत चालकता (डेसी सायमन प्रति मीटर)	8.2
भारी धातु सामग्री (मिलीग्राम/किग्रा)	
आर्सेनिक	10.00 (अधिकतम)
कैडमियम	5.00 (अधिकतम)
क्रोमियम	50.00 (अधिकतम)
कॉपर	300.00 (अधिकतम)
पारा (मरकरी)	0.15 (अधिकतम)
निकेल	50.00 (अधिकतम)
सीसा (लेड)	100.00 (अधिकतम)
जस्ता	1000.00 (अधिकतम)

नोट: इस फॉस्फेट युक्त जैविक खाद का उपयोग सभी अनाज, दलहनी, तिलहनी फसलों, सब्जियों, फलों और फूलों की फसलों में किया जा सकता है।

- अपघटन के दौरान कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जित होती है और मृदा क्षारीयता को कम करने में मदद करती है।
- जल धारण क्षमता में सुधार करती है और अंत:स्पंदन को बढ़ाती है।
- बफरिंग एजेंट के रूप में कार्य करते हुए, ये उच्च अम्लता और क्षारीयता के कारण होने वाले मृदा क्षरण को कम करने में मदद करते हैं।
- प्रोटीन, तेल और अमीनो अम्लों के संश्लेषण में उपयोग किया जाता है।
- बायोगैस संयंत्रों से निकलने वाले अम्लीय अपशिष्ट ठोस पदार्थों का उपयोग करके इसका उत्पादन किया जा सकता है, जिससे पर्यावरण सुरक्षित रहता है और जलवायु परिवर्तन को कम करने में मदद मिलती है।
- जैविक खाद की उपस्थिति के कारण, निक्षालन और अपवाह रुक जाता है, मृदा स्वास्थ्य और उर्वरता में सुधार होता है।
- फॉस्फेट चट्टान से फॉस्फोरिक अम्ल या मौलिक फॉस्फोरस का उत्पादन पूरी तरह से नि:शुल्क है।
- प्रोम का उत्पादन काफी हद तक लागत प्रभावी है क्योंकि यह एक कम ऊर्जा प्रक्रिया है जिसमें उच्च तापमान या उच्च दबाव की आवश्यकता नहीं होती है, किसी रासायनिक उत्प्रेरक की आवश्यकता नहीं होती है, और इसमें किसी भी महंगे रसायन का उपयोग नहीं होता है।

विभिन्न फसलों में प्रोम की संस्तुत मात्रा

फसल	मात्रा प्रति एकड़ (बुवाई के समय)	प्रति एकड़ (खड़ी फसल)
सोयाबीन	100 किग्रा.	-
आलू	100 किग्रा.	-
प्याज	100 किग्रा.	-
लहसुन	100 किग्रा.	-
गेहूँ	100 किग्रा.	-
चना	100 किग्रा.	-
हरी मिर्च	100 किग्रा.	100 किग्रा.
टमाटर	100 किग्रा.	100 किग्रा.
कपास	100 किग्रा.	100 किग्रा.
सब्जियाँ	100 किग्रा.	100 किग्रा.
फलों के बगीचे	100 किग्रा.	500 ग्राम/पौधा, हर 3 माह में

- प्रोम वास्तव में लवणीय मृदाओं में फॉस्फेट उर्वरक के रूप में प्रभावी है जहाँ डीएपी पूरी तरह से विफल रहा है।
- मृदा सूक्ष्मजीवों की वृद्धि को बढ़ाता है जो मिट्टी में या प्राकृतिक रूप से मौजूद फास्फोरस के विघटन में सहायक होते हैं।
- प्रोम के उपयोग से किसानों के लिए उर्वरक की लागत कम होगी और फॉस्फेट खनिज के संरक्षण में भी मदद मिलेगी, जो उच्च अवशिष्ट प्रभाव के कारण एक गैर-नवीकरणीय संसाधन है।
- इस नए फॉस्फेट उर्वरक की कृषि-कुशलता बाजार में उपलब्ध जटिल फॉस्फेट उर्वरकों की तुलना में बेहतर है। प्रोम तटस्थ और क्षारीय मिट्टी के लिए उपयुक्त है, जो भारतीय किसानों के लिए एक वरदान साबित होगा।

कृषि में प्रोम

कृषि फसलों में प्रोम का प्रयोग सुगमता से किया जा सकता है क्योंकि यह देखा गया है कि पौधे इसे आसानी से अवशोषित कर लेते हैं। क्षारीय और अम्लीय, दोनों ही प्रकार की मिट्टी में, यह समान रूप से प्रभावी ढंग से कार्य करता है। कई क्षेत्रीय परीक्षणों से पता चला है कि फसल उत्पादन के मामले में प्रोम, एसएसपी, डीएपी या एमएपी जैसे सिंथेटिक उर्वरकों के बराबर (या अक्सर उनसे बेहतर) प्रदर्शन करता है। नीचे तालिका में सोयाबीन और मूंगफली जैसी फसलों, धान, गेहूं और जौ जैसे अनाज, गोभी और प्याज जैसी सब्जियों की उपज पर कुछ विशिष्ट निष्कर्ष दिए गए हैं। गेहूं और सोयाबीन के लिए एसएसपी (सिंगल सुपरफॉस्फेट) और धान, जौ, मूंगफली, गोभी और प्याज के लिए डीएपी (डायमोनियम फॉस्फेट) जैसे अक्सर उपयोग किए जाने वाले सिंथेटिक फॉस्फेटिक उर्वरकों की तुलना की गई है। प्रोम से प्राप्त सब्जियों, अनाजों और फसलों की उपज प्राय: मिट्टी में सिंथेटिक फॉस्फेटिक उर्वरकों (एसएसपी, डीएपी) के उपयोग से प्राप्त उपज से बेहतर और काफी तुलनीय होती है।

कच्चे फॉस्फेट रॉक और जैविक खाद, यथा वर्मीकम्पोस्ट या एनारोबिक डाइजेस्टर अपशिष्ट का उपयोग फॉस्फेटिक जैव उर्वरक (प्रोम) तथा एडीएस प्रोम बनाने के लिए सफलतापूर्वक किया जा सकता है। जैव उर्वरक की गुणवत्ता में सुधार के लिए, एजोटोबैक्टर और बैसिलस मेगाथेरियम जैसे सूक्ष्मजीवी संवर्धनों का भी उपयोग किया जा सकता है। इस फॉस्फेट युक्त जैविक खाद से मिट्टी के भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों में वृद्धि होती है, जिससे फसल उत्पादन में भी वृद्धि होती है। यह मिट्टी की विद्युत चालकता और मिट्टी के लाभकारी सूक्ष्मजीवों की सक्रियता को बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त, मिट्टी का पीएच मान बनाए रखता है। यह ह्यूमस के निर्माण को प्रोत्साहित करता है। इसके अतिरिक्त, यह प्रभावी जड़ निर्माण को बढ़ावा देता है और बीज अंकुरण के प्रतिशत को बढ़ाता है। यह फसल की गंभीर रोगों से लड़ने की क्षमता को बढ़ाता है। यह उत्पाद पर्यावरण अनुकूलित है अत: इसके प्रयोग से विभिन्न सिंथेटिक उर्वरकों में व्यय लागत में बचत के साथ-साथ बेहतर उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

सिंथेटिक फॉस्फेटिक उर्वरक के साथ प्रोम का तुलनात्मक अध्ययन

फसल	उपज (क्विंटल/हेक्टेयर)				
	एसएसपी	डीएपी	प्रोम	एडीएस से तैयार प्रोम	वर्मीकम्पोस्ट से तैयार प्रोम
गेहूँ	28.9	-	29.5	29.09	28.8
सोयाबीन	10.37	-	11.69	11.55	11.0
मूंगफली	-	30.29	31.08	31.33	30.67
धान	30	39.1	43.85	43.75	42.5
जौ	-	56.23	69.69	70.2	67.25
गोभी	-	116.65	136.1	134.37	136.25
प्याज	-	165.19	167.16	166.66	164.55

स्रोत: खटीक एवं सहयोगी, एग्री आर्टिकल्स (2022)

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

हरी पत्तेदार सब्जियां उगाएं

भूमि– हरी पत्तेदार सब्जियों की खेती सभी प्रकार की भूमि में आसानी से की जा सकती है किन्तु बलुई दोमट मिट्टी जिसका पी.एच. मान 6-7 एवं जल निकास की उचित व्यवस्था हो इनकी खेती के लिए सर्वोत्तम मानी जाती है।

उन्नत किस्में– पालक –पूसा भारती, आलग्रीन, पूसा ज्योति, पूसा हरित, जोबनेर-ग्रीन, एच. एस. 23।

मैथी– हिसार सोनाली, मुक्ता, पूसा अर्ली बंच-, आरएमटी-1, कसूरी।

लालसाग– पूसा लाल चौलाई, पूसा कीर्ति, पूसा किरण।

सलाद पत्ता: ग्रेट लेक, चाईनीज येलो ।

खाद व उर्वरक– बुवाई से पूर्व 100 क्विंटल अच्छी व सड़ी हुई गोबर खाद, 100 किलो ग्राम नत्रजन, 100 कि. ग्रा. फास्फोरस तथा 40 कि. ग्रा. पोटाश/हे. की दर से भूमि में मिलाकर बुवाई करें। प्रत्येक कटाई के बाद 25 कि. ग्रा. नत्रजन/हे. की दर से छिटक कर दें। इससे अधिक उपज प्राप्त होती है।

बुआई विधि – बीज बुवाई के लिए सर्वप्रथम क्यारियों में खाद डालकर अच्छी तरह से मिला दें और भुरभुरी कर लें। यदि नमी न हो तो बुआई के पहले क्यारियों में पलेवा या सिंचाई कर पर्याप्त नमी बना लें। तत्पश्चात बीजों की बुवाई करें । बीज 10-15 सेमी. की दूरी पर बनी लाइनों में बोयें। आवश्यकता से अधिक पौधों को निकाल दें। पत्तियों की कटाई करते समय यह ध्यान रखें कि कटाई जमीन की सतह से 3-5 सेमी. ऊपर से ही करें।

बुआई–

फसल	कतार से कतार की दूरी	बीज से बीज की दूरी
पालक	20 सेमी.	3-4 सेमी.
मैथी	20-25 सेमी.	3-4 सेमी.
चौलाई (छोटी)	20-25 सेमी.	4-5 सेमी.
चौलाई (बड़ी)	30-35 सेमी.	4-5 सेमी.

खरपतवार नियंत्रण– क्यारियों से खरपतवार निकालकर क्यारी सदैव साफ-सुथरी रखनी चाहिए ताकि पौधों के बढ़ने में कोई असुविधा न हो। यदि आवश्यकता पड़े तो समय-समय पर हल्की निंदाई - गुड़ाई भी करते रहें। इनसे पत्तियों की पैदावार - गुणवत्ता युक्त और अधिक प्राप्त होती है तथा कीड़ों का प्रकोप भी कम होता है।

सिंचाई– सब्जियों की किस्म, मिट्टी की दशा व मौसम को ध्यान में रखकर समय-समय पर सिंचाई करते रहना चाहिए। रोपण किये गये पौधों की अपेक्षा पुराने पौधों को अपेक्षाकृत कम सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। वर्षा ऋतु के अधिक पानी को बाहर निकालने की भी पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए। बीज की बुवाई सदैव नमीयुक्त स्थिति में करनी चाहिए। सूखे खेत में बीज की बुवाई करने या बीज की बुवाई के तुरंत बाद सिंचाई करने पर मिट्टी बैठ जाती है। और अंकुरण अच्छा नही होता हैं।

कटाई – बुआई के 25-30 दिन बाद प्रथम कटाई करें, बाद में 15-20 दिन के अंतर पर कटाई करते रहें।

हरी पत्तेदार सब्जियों की बीज दर, बुवाई का उपयुक्त समय एवं कटाई

बीज दर/हे.	बुवाई समय	पत्तियों की कटाई (कि.ग्रा.)
पालक	25-30	सितम्बर-अक्टूबर
विलायती पालक	15-20	सितम्बर-अक्टूबर
मैथी (देशी)	20-25	सितम्बर-मध्य नवम्बर
मैथी (कसूरी)	10-15	सितम्बर-मध्य नवम्बर
चौलाई (छोटी)	2-2.5	फरवरी-मार्च
चौलाई (बड़ी)	5-7	जून-जुलाई व फरवरी-मार्च

उपज–

फसल	उपज क्विंटल/हे.	कटाई संख्या
पालक	100-150	4-8
मैथी	80-100	3-5
चौलाई	70-100	6-7

- **डॉ. लवेश कुमार चौरसिया**
  एसोसिएट प्रोफेसर उद्यान विज्ञान
  रविंद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, रायसेन
- **डॉ. अशोक कुमार वर्मा**
  एसोसिएट डीन,रविंद्रनाथ टैगोर
  विश्वविद्यालय, रायसेन

जैविक कीटनाशक बनाने की विधि एवं व्याधि नियंत्रण

ब्रह्मास्त्र

ब्रह्मास्त्र बनाने हेतु आवश्यक सामग्री:

- 10 लीटर गोमूत्र
- 3 किलोग्राम नीम की पत्ती की चटनी
- 2 किलोग्राम करंज की पत्तों की चटनी
- 2 किलोग्राम सीताफल पत्ते की चटनी
- 2 किलोग्राम बेल के पत्ते
- 2 किलोग्राम अंडी के पत्ते की चटनी
- 2 किलोग्राम धतूरा के पत्ते की चटनी

बनाने की विधि: इन सभी सामग्री में से कोई भी पांच सामग्री के मिश्रण को गोमूत्र में मिट्टी के बर्तन पर डाल कर आग में उबाले जैसे चार उबले आ जाए तो आग से उतारकर 48 घंटे छाए में ठंडा होने दें। इसके बाद कपड़े से छानकर भंडारण करे।

अवधि प्रयोग: ब्रह्मास्त्र का प्रयोग छः माह तक कर सकते हैं।

सावधानियां: भंडारण मिट्टी के बर्तन में करें गोमूत्र धातु के बर्तन में न रखें।

छिड़काव: एक एकड़ हेतु 100 लीटर पानी में 3 से 4 लीटर ब्रह्मास्त्र मिला कर छिड़काव करें।

अग्नी अस्त्र

(तना कीट फलों में होने वाली सूंडी एवं इल्लियों के लिए)

बनाने हेतु आवश्यक सामग्री:

- 20 लीटर गोमूत्र
- 5 किलोग्राम नीम के पत्ते की चटनी
- आधा किलोग्राम तम्बाकू का पाउडर
- आधा किलोग्राम हरी तीखी मिर्च
- 500 ग्राम देशी लहसुन की चटनी

बनाने की विधि: उपयुक्त ऊपर लिखी हुई सामग्री को एक मिट्टी के बर्तन में डालें और आग से चार बार उबाल आने दें। फिर 48 घंटे छाए में रखें। 48 घंटे में चार बार डंडे से चलाएं।

अवधि प्रयोग: अग्नी अस्त्र का प्रयोग केवल तीन माह तक प्रयोग कर सकते हैं।

सावधानियां: मिट्टी के बर्तन पर ही सामग्री को उबल आने दे।

छिड़काव: 5 ली. अग्नी अस्त्र को छानकर 200 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे मशीन या नीम के लेवचा से छिड़काव करें।

गोमूत्र

गोमूत्र कांच की शीशी में भरकर धूप में रख सकते हैं जितना पुराना गोमूत्र होगा उतना अधिक सरदारी असरकारी होगा 12 से 15 मिली लिटर गोमूत्र प्रति लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे पंप से फसलों में बुवाई के 15 दिन बाद प्रत्येक 10 दिवस में छिड़काव करने से फसलों में रोग एवं कीड़ों में प्रतिरोधी क्षमता विकसित होती जिससे प्रकोप की संभावना कम रहती है

नीम के उत्पाद

नीम भारतीय मूल का पौधा है जिसे समूल की वेद के रूप में मान्यता प्राप्त है इससे मनुष्य के लिए उपयोगी ओषधिया तैयार की जाती है तथा इसके उत्पाद फसल संरक्षण के लिए अत्यंत उपयोगी हैं।

नीम पत्ती का घोल : नीम की 10 से 12 किलो पत्तियां 200 लीटर पानी में 4 दिन तक भिगोये पानी हरा पीला होने पर इसे छानकर एक एकड़ फसल पर छिड़काव करने से इल्ली की रोकथाम होती है इस ओषधि की तीव्रता बढ़ाने हेतु बेशरम, धतूरा, तंबाकू आदि के पत्तों को मिलाकर काढ़ा बनाने से ओषधि की तीव्रता बड़ जाती है ओर यह दवा कई प्रकार के कीड़ो को नष्ट करने में उपयोगी सिद्ध है। नीम की निंबोली 2 किलो लेकर महीन पीस लें इसमें 2 लीटर ताजा गोमूत्र मिला लें इसमें 10 किलो छाछ मिलाकर 4 दिन रखें और 200 लीटर पानी में मिलाकर खेतों में फसल पर छिड़कें।

दीमक नियंत्रण के देशी उपाय

मक्का के भुट्टे से दाना निकलने के बाद, जो गिंडियां बचती हैं, उन्हें एक मिट्टी के घड़े में इकट्ठा करके घड़े को खेत में इस प्रकार गाढ़ें कि घड़े का मुँह जमीन से कुछ बाहर निकला हो। घड़े के ऊपर कपड़ा बांध दें तथा उसमें पानी भर दें। कुछ दिनों में ही आप देखेंगें कि घड़े में दीमक भर गई है। इसके उपरांत घड़े को बाहर निकालकर गरम कर लें ताकि दीमक समाप्त हो जाये। इस प्रकार के घड़े को खेत में 100-100 मीटर की दूरी पर गड़ाएं तथा करीब 5 बार गिंडियां बदलकर यह क्रिया दोहराएं। खेत में दीमक समाप्त हो जायेगी।

सुपारी के आकार की हींग एक कपड़े में लपेटकर तथा पत्थर में बांधकर खेत की ओर बहने वाले पानी की नाली में रख दें। उससे दीमक तथा उगरा रोग नष्ट हो जायेगा।

मछली-सह-बतख पालन : किसानों के लिए आय का उत्तम स्रोत

• नितेश कुमार यादव • डॉ. एस. के. शर्मा
महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर, (राज.)
• रोहिताश यादव
केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुम्बई

एकीकृत मछली–सह–बतख पालन के लाभ

● तालाबों के पानी की सतह को बतख पालन द्वारा पूर्ण उपयोग में लाया जा सकता है।

● मछली पालन के तालाब बतख के लिए एक उत्कृष्ट वातावरण प्रदान करते हैं जो उन्हें परजीवियों के संक्रमण से बचाता है।

● बतख मछली पालन तालाब में उपस्थित कीड़े–मकोड़े का सेवन करते हैं और मछली की अंगुलिकाओं को बढ़ने में मदद करते हैं।

● मछली के तालाबों में बतख पालने से बतख आहार में प्रोटीन की मांग 2–3 प्रतिशत तक कम हो जाती है।

● प्राकृतिक खाद्य जीवों के उपज को बढ़ाने के लिए आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करने वाले पानी में बतख की मल संबंधी पदार्थ सीधे पानी में चली जाती हैं।

● बतख आहार (लगभग 20–30 ग्राम बतख) का दैनिक अपशिष्ट मछली के भोजन के रूप में तालाबों में या खाद के रूप में कार्य करता है, जिसके परिणामस्वरूप मछली की उपज अधिक होती है।

● आहार की खोज में बतखों के तालाब मे तैरने की क्रिया से मिट्टी के पोषण तत्व फैल जाते हैं और पानी में प्लवक उत्पादन को बढ़ावा देते हैं।

● बतख तालाब में तैरने, खेलने और पीछा करने के साथ बायो एरेटर का काम करती हैं। तालाब की सतह के लिए यह वातन की सुविधा प्रदान करते है।

● बतख की आहार दक्षता और शरीर के वजन में वृद्धि होती है और मछलियों द्वारा बिखरे हुए फीड का उपयोग किया जा सकता है।

● मछली पालन तालाबों के स्वच्छ वातावरण के कारण बतखों का जीवन दर तक 3.5 प्रतिशत तक बढ़ जाता है।

● बतख की मल संबंधी और प्रत्येक बतख का बचा हुआ चारा मछली का उत्पादन 37.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तक बढ़ा सकता है।

● बतख जलीय पौधों के अनावश्यक बढ़वार को रोकते हैं।

● बतखों के लिए कोई अतिरिक्त भूमि की आवश्यकता नहीं होती है।

● यह कम निवेश के माध्यम से उच्च लाभ सुनिश्चित करता है।

बतखों का चयन

एक हेक्टेयर मछली पालन तालाब की पर्याप्त खाद के लिए आवश्यक बतखों की संख्या भी एक विचार का विषय है, पालन के लिये उपयोग में लिये जाने वाले बतख के प्रकार को देखभाल के साथ चुना जाना चाहिए क्योंकि सभी पालतू नस्लें उत्पादक नहीं हैं

भारतीय बतख की महत्वपूर्ण नस्लें

● सिलहट मेटे

● नागेश्वरी

● बतख की हायब्रिड नस्ल, भारतीय धावक, तथा विदेशी नस्ल खाकी कैंपबेल उपयुक्त हैं।

● मछली पालन के साथ एक हेक्टेयर जल क्षेत्र के लिए 200–300 बतख पर्याप्त मात्रा में खाद का उत्पादन करने के लिए सक्षम हैं।

● 2–4 महीने पुरानी डकलिंग को महामारी के खिलाफसुरक्षा के रूप में आवश्यक रोग निरोधी दवाएं प्रदान करने के बाद तालाब पर रखा जाता है।

● 200–300 बत्तख/ हेक्टेयर का संचयन घनत्व 10,000–15,000 किग्रा खाद देता है और हर साल एक हेक्टेयर के तालाब में पुनर्नवीनीकरण किया जाता है। बतख की खाद में शुष्क पदार्थ के आधार पर 81प्रतिशत नमी, 0.91 प्रतिशत नाइट्रोजन और 0.38 प्रतिशत फास्फेट होते हैं।

● बतख को सुबह 9 से 5 बजे तक तालाब की सतह पर रहने दिया जाता है, ताकि वे पूरे तालाब में स्वचालित रूप से अपनी मल को वितरित कर सके।

भोजन

खुले पानी में बतख तालाब से प्राकृतिक भोजन प्राप्त करने में सक्षम हैं, लेकिन यह उनके उचित वृद्धि के लिए पर्याप्त नहीं है वजन के 1ः 2 अनुपात में किसी भी मानक संतुलित पोल्ट्री फीड और राइस ब्रान का मिश्रण 100 ग्राम/पक्षी/दिन की दर से पूरक आहार के रूप में बतख को खिलाया जा सकता है आहार को दिन में दो बार (पहला सुबह और दूसरा शाम) दिया जाता है, आहार को या तो तालाब तटबंध पर या तालाब में पानी की सतह पर फैला दिया जाता है।

मछली संचयन

मछली–सह–बतख पालन प्रणाली में मछली संचयन की दर से 6000 अन्गुलिकाएं प्रति हेक्टेयर रखी जाती है विभिन्न प्रजातियों का अनुपात 40 प्रतिशत सतह पर रहने वाली मछलियां, 20 प्रतिशत पानी के बीच में रहने वाली (कॉलम फीडर) 30 प्रतिशत पेंदे में रहने वाली मछलियां तथा 10 से 20 प्रतिशत जलीय खरपतवार खाने वाली मछलियों को रखा जाता है।

● केवल भारतीय प्रमुख कार्पों की मिश्रित पालन में 40 प्रतिशत सतह, 30 प्रतिशत स्तंभ (कॉलम फीडर) और 30 प्रतिशत पेंदे में रहने वाली मछली की प्रजातियों के अनुपात के साथ लिया जा सकता है।

● मछली की अंगुलिकाओं का संचयन जून–सितंबर महीने में करते हैं तथा 12 महीने तक मछली पालन किया जाता है

● भारत के उत्तरी और उत्तर – पश्चिमी राज्यों में, तालाबों को मार्च के महीने मछली का संचयन किया जाना चाहिए और सर्दी के कारण अक्टूबर–नवंबर के महीने में निकाल लिया जाना चाहिए, जो मछलियों के विकास को प्रभावित करते हैं।

● भारत के दक्षिण, तटीय और उत्तर–पूर्वी राज्यों में, जहां सर्दियों का मौसम कम होता है, तालाबों को जून–सितंबर महीनों में स्टॉक किया जाना चाहिए और 12 महीने तक मछली को पालने के बाद निकाल लिया जाना चाहिए।

बतख के अंडों का उत्पादन

बतख छह माह की आयु में अंडे देना चालू कर देती है तथा लगातार 2 से 3 साल तक अंडों का उत्पादन लिया जा सकता है जो बतख की प्रजाति, पोषण तथा प्रकृतिक वातावरण पर निर्भर करता है बतख रात्रि के समय अंडे देते हैं इसलिए बतख के तालाब में रहने के समय अंडे देने की संभावना नहीं होती है।

मछली पालन के साथ किसी भी पशुपालन को सम्मिलित किया जा सकता है जिससे कम खर्चे में अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है, सामान्यतया मछली पालन के साथ मुर्गी, सूअर, खरगोश तथा बत्तख पालन काफी प्रचलित है तथा इनसे उत्पन्न खाद का प्रयोग सीधे मछली पालन में आहार के रूप में किया जाता है मछली पालन में सबसे ज्यादा खर्चा भोजन पर होता है जो कि कुल लागत का 60 प्रतिशत तक होता है अतः समन्वित मछली पालन से पशुपालन के द्वारा उत्पन्न खाद का प्रयोग करके मछली के भोजन के खर्च को कम किया जा सकता है तथा कम लागत में अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है मछली पालन के साथ बत्तख पालन में दोनों के पालन में लाभ होता है।

कोई पशु हीट स्ट्रेस में हैं इसे कैसे पहचानेंगे

● डॉ. संजीव कुमार वर्मा

जैसे ही पशु हीट स्ट्रेस में आएगा तो वह हांफने लगेगा। उसकी जीभ बाहर आ जाएगी। सांसें तेज चलने लगेंगी। गाय सामान्यतः एक मिनट में 15 से 30 बार सांस लेती है। गाय में अगर सांस लेने की रफ्तार एक मिनट में 50 से अधिक हो तो हम कहेंगे कि वह हीट स्ट्रेस का शिकार हो गई है।

गर्मी के इस मौसम में पशुओं का खान पान कैसा हो ताकि वह हीट स्ट्रेस से बचे रहे?

गर्मी के मौसम में पशु चारा खाना कम कर देते हैं जिसके कारण जितना चारा दाना वह खाते हैं उससे उनकी ऊर्जा, प्रोटीन और विटामिन मिनरल्स की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती है। इसलिए गर्मी के मौसम में पशुओं के खान–पान का विशेष ध्यान रखना होता है।

● गर्मी के मौसम में पानी सबसे महत्वपूर्ण पोषक तत्व है। इसलिए इस मौसम में पशुओं को भरपूर मात्रा में साफ और शीतल जल पिलाएं। धूप में रखा हुआ पानी कदापि ना दें।

● गर्मी के मौसम में भूसे की मात्रा कम कर दें और रातिब मिश्रण की मात्रा बढ़ा दें।

● इस समय कोशिश करें कि पशु को जो भी हरा चारा दिया जाए वह मुलायम हो।

● इस मौसम में चूंकि पशु कम चारा खायेगा इसलिए पर्याप्त ऊर्जा और प्रोटीन की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए उसके रातिब मिश्रण में ऊर्जा और प्रोटीन की मात्रा बढा दें। इसके लिए कोई भी अनाज जैसे गेहूं, चावल, ज्वार, बाजरा 40 किलो; चोकर या चूरी 37 किलो और कोई भी खली 20 किलो लेकर उसमें 1 किलो सादा नमक और 2 किलो विटामिन मिनरल मिक्सचर मिला लें। इस प्रकार बने रातिब मिश्रण में ऊर्जा और प्रोटीन की मात्रा अधिक होगी।

● ऊर्जा की आपूर्ति बढ़ाने के लिए पशुओं को प्रतिदिन 100 ग्राम तक सरसों का तेल भी दिया जा सकता है।

● इस समय पशु की इलेक्ट्रोलाइट्स की आवश्यकता बढ़ जाती है इसलिए पशुओं को विरबेक कम्पनी का प्रोब्लेण्ड पावडर 50 से 100 ग्राम प्रतिदिन दिया जा सकता है। इसे देने से इलेक्ट्रोलाइट्स बैलेंस बना रहेगा।

● इसके अलावा पशुओं को चारा दाना सुबह और शाम को ठंडक के समय ही दें।

● पशुशाला में गर्मी से बचाव के पर्याप्त इंतजाम करें जैसे फर्राटा पंखे लगा दें। हो सके तो फोगर लगा दें। ये ना हो सके तो पशुओं के ऊपर पानी में भीगी टाट पट्टी ही डाल दें ताकि ठंडक बनी रहे।

● पशुओं को ज्यादा देर धूप में ना रखें।

● अगर कोई पशु हीट स्ट्रेस से ग्रसित दिखे तो तुरंत चिकित्सीय सहायता लें।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

जलवायु परिवर्तन और खेती पर इसका प्रभाव

● हरीश बाथम (एम.एस.सी. (कृषि) एग्रोनॉमी स्कॉलर)
● अभय प्रताप सिंह तोमर (एमएससी (कृषि) एग्रोनॉमी स्कॉलर)
● डॉ. सचिन कुमार सिंह (विभाग प्रमुख),
कृषि विद्यालय, विक्रांत विश्वविद्यालय, ग्वालियर
Jiharish093@gmail.com

जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक संकट बन चुका है जो न केवल हमारे पर्यावरण को प्रभावित कर रहा है, बल्कि कृषि क्षेत्र पर भी गहरा प्रभाव डाल रहा है। दुनिया भर में कृषि उत्पादन का मुख्य आधार मौसम और जलवायु परिस्थितियां हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि में अनिश्चितता और नुकसान बढ़ता जा रहा है। बदलते मौसम, बढ़ते तापमान, अनियमित वर्षा और बढ़ती प्राकृतिक आपदाओं के कारण किसानों के लिए कृषि करना कठिन हो गया है। जलवायु परिवर्तन का मतलब है पृथ्वी की जलवायु में होने वाले दीर्घकालिक बदलाव। यह बदलाव प्राकृतिक कारणों के साथ-साथ मानव गतिविधियों, जैसे औद्योगिकीकरण, वनों की कटाई, और कार्बन उत्सर्जन के कारण हो रहे हैं। इन बदलावों के कारण वैश्विक तापमान में वृद्धि हो रही है, जिससे मौसम के पैटर्न में बदलाव और अधिक गंभीर प्राकृतिक आपदाएं जैसे बाढ़, सूखा, और तूफान उत्पन्न हो रहे हैं।

वर्षा की अनियमितता

जब वर्षा का समय, मात्रा, या स्थान बदल जाए यानीः कभी बहुत अधिक, कभी बहुत कम वर्षा, समय पर मानसून न आना या अचानक रुक जाना लगातार बारिश की बजाय टुकड़ों में बारिश होना इसे ही वर्षा की अनियमितता (irregularity) कहते हैं।

खेती पर प्रभाव

बुवाई में देरी/असफलता

बारिश समय पर न होने से खरीफ फसलों की बुवाई नहीं हो पाती, या पुनः बुवाई करनी पड़ती है।

फसलों के विकास में बाधा

खरपतवार, कीट व रोग बढ़ना

कटाई के समय बारिश का खतरा

मिट्टी का क्षरण और पोषक तत्वों की हानि

समाधान / सुझाव

- फसल विविधिकरण ● वर्षा जल संचयन
- मल्चिंग और जैविक पदार्थों का प्रयोग-मिट्टी में नमी बनाए रखना
- सिंचाई और जल प्रबंधन की नई तकनीकें अपनाना
- Weather Forecasting Apps और SMS alert सेवा का उपयोग

तापमान में वृद्धि और कृषि पर इसके प्रभाव

जलवायु परिवर्तन के कारण वैश्विक औसत तापमान में लगातार वृद्धि हो रही है। भारत जैसे कृषि-प्रधान देश में, जहां खेती मौसम पर निर्भर है, वहाँ तापमान में मामूली वृद्धि भी उपज, फसल समय और गुणवत्ता पर गहरा असर डालती है।

सूखा और जलवायु संकट : कृषि पर प्रभाव

जलवायु परिवर्तन का एक बड़ा दुष्परिणाम है - सूखा। लगातार बदलते मौसम और अनियमित वर्षा के कारण सूखे की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। सूखा तब होता है जब किसी क्षेत्र में लंबे समय तक सामान्य से बहुत कम वर्षा होती है। इसका सीधा असर खेती पर पड़ता है, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहां सिंचाई के सीमित साधन हैं।

फसलों को पानी की कमी : जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा पैटर्न में बदलाव और पानी की उपलब्धता में कमी हो रही है। सूखा और पानी की कमी अब कृषि संकट का प्रमुख कारण बन रहे हैं, जिससे उत्पादकता और किसानों की आय पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है।

मुख्य प्रभाव

फसल की वृद्धि अवधि में कमी : तापमान बढ़ने से फसलों की विकास दर तेज हो जाती है, जिससे वे जल्दी पक जाती हैं लेकिन उपज कम होती है।

उदाहरण : गेहूं में दाना भरने की अवधि घटती है? उत्पादन में गिरावट।

Heat stress का असर : अधिक गर्मी से फसलों में पत्तियों का झुलसना, पुष्प झड़ना और फल बनने की प्रक्रिया बाधित होती है।

जैसे : टमाटर, मिर्च, मूंगफली में फूल झड़ने की समस्या।

उच्च वाष्पीकरण दर : गर्मी बढ़ने से पौधों और मिट्टी से पानी तेजी से वाष्पित होता है - सिंचाई की मांग बढ़ती है।

पुष्पन और परागण पर असर : तापमान असंतुलन से फूल बनने की प्रक्रिया गड़बड़ा जाती है।

मधुमक्खियों जैसे परागणकर्ता प्रभावित होते हैं - फलदार फसलों में गिरावट।

फसलों पर पानी की कमी के प्रभाव

फसल वृद्धि में बाधा : ● पानी की कमी से पौधों में नमी का अभाव हो जाता है, जिससे अंकुरण और जड़ विकास प्रभावित होते हैं।

● फसलें कमजोर हो जाती हैं और उनका विकास रुक जाता है।

आलसी जलवायु : ● सूखा और पानी की कमी के कारण सिंचाई स्रोत सूख जाते हैं, जिससे खेतों तक पानी पहुंचने में कठिनाई होती है।

● तालाब, कुएं और नदियाँ सूख जाती हैं, जिससे सिंचाई का विकल्प सीमित हो जाता है।

फसल का समय : ● पानी की कमी से फसलों की विकास अवधि कम हो जाती है, जिससे समय से पहले फसल पकने की संभावना बढ़ती है, लेकिन उत्पादन कम होता है।

उदाहरण: गेहूं और धान की फसलें अधिक पानी की मांग करती हैं, और इनकी जलवायु परिवर्तन के तहत उत्पादकता घट जाती है।

पानी की गुणवत्ता में कमी : ● भूजल स्तर में गिरावट और अधिक नल/नलकूप का प्रयोग करके सिंचाई करना पानी की गुणवत्ता में कमी का कारण बनता है।

● इसके कारण पानी में खनिजों की मात्रा बढ़ने के साथ मिट्टी की गुणवत्ता भी प्रभावित हो सकती है।

समाधान :

सूक्ष्म सिंचाई पद्धति, जलवायु सहिष्णु फसलें

वर्षा जल संचयन , मल्चिंग और कवर क्रॉपिंग

मिट्टी की गुणवत्ता पर जलवायु परिवर्तन का असर

मुख्य कारण : जलवायु परिवर्तन के कारण अत्यधिक वर्षा, तेज हवाएँ, और अचानक मौसम परिवर्तन की घटनाएं बढ़ रही हैं, जो सीधे तौर पर मिट्टी की संरचना, उपजाऊपन और स्थिरता को प्रभावित करती हैं।

टॉपसॉइल (ऊपरी उपजाऊ मिट्टी) का नुकसान : भारी वर्षा और सतही बहाव से मिट्टी का कटाव होता है टॉपसॉइल में ही कार्बन, जैविक पदार्थ और पोषक तत्व सबसे अधिक होते हैं - इनका नुकसान सीधे फसल उत्पादकता को प्रभावित करता है।

कार्बन और पोषक तत्वों की हानि : जलवायु परिवर्तन के कारण मिट्टी का जैविक कार्बन तेजी से घट रहा है। NPK जैसे पोषक तत्व बारिश में बहकर निकल जाते हैं - न्यूट्रिएंट लीचिंग।

मिट्टी की नमी बनाए रखने की क्षमता में गिरावट : सूखा और तापमान वृद्धि से मिट्टी में ह्यूमस और जलधारण क्षमता घटती है। इससे सूखे के दौरान फसलों को पानी की कमी होती है।

मिट्टी की संरचना में बदलाव : बार-बार गीली और सूखी होने की स्थिति- मिट्टी में दरारें, कठोर परत, जलभराव की समस्या

समाधान/सुझाव :

- कंटूर फार्मिंग और टेरसिंग जैसे मृदा संरक्षण उपाय अपनाएं
- मल्चिंग, कवर क्रॉपिंग और ऑर्गेनिक मैटर का उपयोग करें
- वर्षा जल संचयन और सूखा-रोधी फसलें अपनाएं
- स्वायल हेल्थ कार्ड योजना का लाभ लें
- जैविक खाद का प्रयोग बढ़ाएं

कीट एवं रोगों की बढ़ती घटनाएं

मुख्य कारण : तापमान में वृद्धि और अत्यधिक आर्द्रता वातावरण को कीटों और रोगजनकों के लिए अधिक अनुकूल बना देते हैं। कीटों का जीवनचक्र छोटा हो जाता है, जिससे उनकी संख्या तेजी से बढ़ती है।

प्रभावः

नए क्षेत्रों में विस्तार : जो कीट पहले केवल उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों तक सीमित थे, अब वे समशीतोष्ण और शुष्क क्षेत्रों में भी देखे जा रहे हैं। उदाहरण : फॉल आर्मीवर्म (Spodoptera frugiperda)

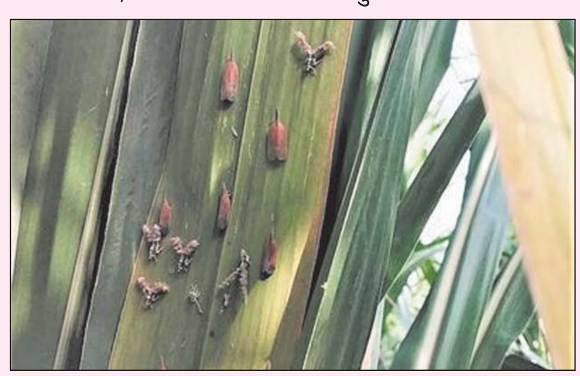

पहले अमेरिका और अफ्रीका तक सीमित था, अब भारत के कई राज्यों में मक्का की फसल को प्रभावित कर रहा है।

कीटों की नई पीढ़ियाँ: तापमान बढ़ने से कीटों की एक साल में ज्यादा पीढ़ियाँ निकलती हैं, जैसे : सफेद मक्खी (कपास, सोयाबीन) अब ज्यादा बार हमला करते हैं।

रोगों की तीव्रता में वृद्धि : आर्द्रता बढ़ने से फफूंद रोग जैसे- ब्लाइट, पाउड्री मिल्ड्यू, डॉऊनी मिलड्यू का प्रकोप अधिक हो गया है।

कीटनाशकों पर निर्भरता बढ़ना : बार-बार कीटों का आक्रमण- अधिक कीटनाशकों का प्रयोग- पर्यावरणीय प्रदूषण + कीटों में प्रतिरोध (Resistance)

एरोपोनिक्स इकाई का लोकार्पण

राज्यपाल श्री मंगूभाई पटेल ने गतदिनों कृषि महाविद्यालय सीहोर के कन्या छात्रावास एवं ऐरोपोनिक्स इकाई का लोकार्पण किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि किसान को खेती की जैविक पद्धतियों, प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के लिए प्रेरित करें।

कृषि सहित सभी क्षेत्रों में उपयोग के लिए सरकार ने बनाई नई ड्रोन पॉलिसी : डॉ. यादव

मुख्यमंत्री ड्रोन टेक वर्कशॉप एक्सपो 2025 में हुए शामिल

भोपाल (कृषक जगत)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र की सहायता से प्रदेश में विकास के हर संभव प्रयास जारी हैं। प्रदेश सरकार ने अपनी नई ड्रोन पॉलिसी भी तैयार की है। हमें दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ने की आवश्यकता है। भारतीय समाज नई तकनीक और नवाचारों को शीघ्रता से आत्मसात करने में कभी पीछे नहीं रहा है। ड्रोन, विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी बदलाव है। ड्रोन कृषि कार्यों में आज अन्नदाता की मदद कर रहा है। इससे खेतों में कीटनाशक दवाओं का छिड़काव आसान हुआ है। ड्रोन तकनीक से देश के दुश्मनों का खात्मा भी हो रहा है। अब तो शादियां भी ड्रोन के बिना पूरी नहीं होती हैं। हमारे वैज्ञानिक वाइस कमांड कंट्रोल की सहायता से ड्रोन को ज्यादा आधुनिक बना रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ड्रोन तकनीक कार्यशाला एवं एक्सपो 2025 का विज्ञान भवन में शुभारंभ किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस अवसर पर लगाई गई प्रदर्शनी और वर्कशॉप का शुभारंभ कर अवलोकन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं, स्टार्टअप और औद्योगिक संस्थानों द्वारा लगाए गए स्टॉल्स पर पहुंचकर ड्रोन तकनीक के शैक्षणिक, औद्योगिक और कृषि क्षेत्र में उपयोग के संबंध में जानकारी प्राप्त की।

मध्यप्रदेश विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा परिषद के महानिदेशक डॉ. अनिल कोठारी ने कहा कि मध्यप्रदेश के 70वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में ड्रोन टेक वर्कशॉप एक्सपो-2025 आयोजित की गई।

स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर भोपाल के निदेशक श्री कैलाश राव ने कहा कि आज ड्रोन तकनीक अधोसंरचना विकास कार्यों को मूर्तरूप देने में अहम भूमिका निभा रही है। अपर मुख्य सचिव विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा श्री संजय दुबे ने कहा कि प्रदेश में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विविध गतिविधियां जारी हैं। प्रदेश के युवाओं को आगे बढ़ने के अनेक अवसर प्राप्त हो रहे हैं। ड्रोन अब केवल रक्षा या निगरानी का साधन नहीं रहे बल्कि कृषि, भू-सर्वेक्षण, पर्यावरण संरक्षण, आपदा प्रबंधन, स्वास्थ्य सेवाएँ, परिवहन, उद्योग एवं मीडिया जैसे अनेक क्षेत्रों में उपयोगी साबित हो रहे हैं।

भावांतर में अब तक हुई 47 हजार टन से अधिक सोयाबीन खरीदी

भोपाल (कृषक जगत)। प्रदेश में सोयाबीन फसल के लिए लागू की गई भावांतर योजना में 9 लाख 36 हजार 352 किसानों ने पंजीयन कराया है। सोयाबीन का विक्रय 24 अक्टूबर से प्रारंभ हुआ है जो 15 जनवरी 2026 तक जारी रहेगा। गत सप्ताह तक 27 हजार 63 किसानों से 47 हजार 493 टन सोयाबीन खरीदी गई है।

मंगलवार 28 अक्टूबर को 10 हजार 851 किसानों से 19 हजार 191 टन सोयाबीन की खरीदी हुई। कृषि उपज मंडी देवास में सर्वाधिक 1699, इंदौर में 1579, उज्जैन में 1538, गंजबासौदा में 1283, बैरसिया में 1154, आगर में 1085, आष्टा में 1061, शाजापुर में 1053, तराना में 1040 एवं सागर मंडी में 962 टन सोयाबीन की खरीदी हुई। इसी प्रकार सर्वाधिक किसानों के पहुँचने की टॉप मंडियों में गंजबासौदा मंडी में 1254, देवास में 1182, उज्जैन में 1106, आष्टा में 1075, बैरसिया में 900, आगर में 891, इंदौर में 795, शाजापुर में 787, सीहोर में 741 एवं नरसिंहगढ़ मंडी में 701 किसान सोयाबीन की बिक्री के लिए पहुँचे। मंडी बड़नगर जिला उज्जैन में अधिकतम भाव 5725 रूपये प्रति क्विंटल रहा।

प्रदेश में सोयाबीन की बुवाई का रकबा गत वित्तीय वर्ष 2024-25 में 58.72 लाख हेक्टेयर था जो वर्तमान में 53.20 लाख हेक्टेयर है। इस वर्ष 2025-26 में 55.54 लाख मीट्रिक टन सोयाबीन का उत्पादन हुआ है। भावांतर योजनांतर्गत 3 अक्टूबर से 17 अक्टूबर तक पंजीयन हुए थे। सोयाबीन खरीदी के प्रथम मॉडल भाव की घोषणा 7 नवंबर 2025 को की जाएगी। **किसानों की सुविधाओं के लिए मंडी बोर्ड स्थित भावांतर हेल्पलाइन का दूरभाष नंबर - 0755-2704555 है।**

श्री छाबनिया को पी.डी. आत्मा का प्रभार

भोपाल (कृषक जगत)। राज्य शासन ने धार जिले में पदस्थ सहायक संचालक कृषि श्री टी.सी. छाबनिया को परियोजना संचालक आत्मा का प्रभार सौंपा है। उन्होंने पदभार ग्रहण कर लिया है। वे पूर्व में देवास, शाजापुर, रायसेन के साथ ही बीज प्रमाणीकरण संस्था में भी सेवाएं दे चुके हैं।

फोटो गैलरी

केंद्रीय गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने मझगांव डॉक, मुंबई में प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत 'गहन सागरीय मत्स्य नौकाओं' का लोकार्पण किया। इस अवसर पर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देवेंद्र फडणवीस, उप मुख्यमंत्री श्री एकनाथ शिंदे और श्री अजीत पवार भी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मध्यप्रदेश स्थापना दिवस पर राजा भोज अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे भोपाल से पीएमश्री पर्यटन हेलीकॉप्टर सेवा का शुभारंभ कर हरी झंडी दिखाई।

केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने दिल्ली में राष्ट्रीय एफपीओ सम्मेलन 2025 का उद्घाटन किया। इस अवसर पर देश के 24 राज्यों और 140 जिलों से आए 500 से अधिक किसान उत्पादक संगठनों, किसानों, इम्प्लीमेंटिंग एजेंसियों और क्लस्टर आधारित व्यवसाय संगठनों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम लि. (एनएसआईसी) ने वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए सरकार को 43.89 करोड़ रुपये का लाभांश दिया। एनएसआईसी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. सुभ्रांशु शेखर आचार्य ने केंद्रीय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्री श्री जीतन राम मांझी और एमएसएमई की राज्य मंत्री सुश्री शोभा करंदलाजे को यह लाभांश का चेक भेंट किया।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

देश में पहली बार दक्षिण अफ्रीका के सहयोग से

शाजापुर जिले में कृष्ण मृगों को पकड़ने का अभियान शुरू

इंदौर (कृषक जगत)। मालवांचल में खासतौर से इंदौर, उज्जैन, देवास और शाजापुर जिलों के किसान कृष्ण मृग और रोजड़ों द्वारा खेतों में उगी फसल को नुकसान पहुंचाने की समस्या से वर्षों से परेशान थे, लेकिन अब इस समस्या के समाधान के लिए देश में पहली बार दक्षिण अफ्रीका की कंजर्वेशन सोल्यूशंस की टीम एवं वन विभाग की टीम के संयुक्त प्रयास से हेलीकॉप्टर और बोमा पद्धति से कृष्ण मृगों को पकड़ने के अभियान शाजापुर जिले में शुरू किया गया है। इस अभियान के तहत अब तक 148 कृष्ण मृगों को पकड़कर मंदसौर जिले के गांधीसागर वन्य जीव अभ्यारण्य में छोड़ा गया है। इस अभियान से किसानों की फसल नुकसानी में कमी आएगी।

मुख्य वन संरक्षक उज्जैन श्री एमआर बघेल के द्वारा बोमा क्षेत्र में कृष्ण मृगों को पकड़ने की कार्यवाही की निगरानी की जा रही है। जिसमें शाजापुर जिला प्रशासन और पुलिस विभाग ने पूर्ण सहयोग दिया है।

श्री बघेल ने आसपास के ग्राम वासियों से अपील की है कि आने वाले दिनों की कार्यवाही के दौरान खेतों में जब हेलीकॉप्टर द्वारा हांका लगाया जा रहा है तो कृष्ण मृगों के पीछे ना भागें। साथ ही आसपास के रास्तों में गाड़ियों में ना घूमें। इस अभियान के प्रभारी वनमंडलाधिकारी देवास श्री वीरेन्द्र सिंह पटेल के अनुसार शाजापुर जिले कृष्णमृगों को पकड़कर गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य के जंगल में छोड़ा गया।

क्या है बोमा पद्धति ? – बोमा पद्धति दरअसल दक्षिण अफ्रीका की तकनीक है, जिसके ज़रिए हिरणों को सुरक्षित तरीके से पकड़ा जाता है। बोमा यानी अस्थायी घेरा होता है, जिसे जंगल में भारी कपड़े की मदद से बनाया जाता है। सबसे पहले हिरणों के झुण्ड की लोकेशन पता की जाती है। फिर हेलीकॉप्टर से हांका लगाया जाता है और हिरणों को हेलीकॉप्टर की आवाज़ और हवा के दबाव से बोमा की तरफ ले जाया जाता है। जैसे ही हिरण बोमा में पहुँचते हैं, वैसे ही छिपे वनकर्मी बोमा के गेट बंद कर देते हैं और हिरणों को कैद करने के बाद बेहोश करके सुरक्षित वाहन में शिफ्ट कर देते हैं। 15 नवंबर तक चलने वाले इस अभियान में संयुक्त टीम द्वारा हिरण और नीलगाय (रोजड़े) पकड़ने का लक्ष्य रखा गया है।

श्री आर एल जामरे, उप संचालक कृषि, शाजापुर ने कृषक जगत को बताया कि वन्य जीवों को पकड़ने के इस अभियान से किसानों को बहुत लाभ होगा। किसानों को फसल नुकसानी की चिंता नहीं रहेगी। जो किसान अभी तक चयनित फसलें उगाते थे, वे अब अन्य फसलें भी उगाने लगेंगे।

किसानों को कृषि यंत्रों के उपयोग के लिए किया जा रहा प्रोत्साहित

खरगोन (कृषक जगत)। मप्र शासन की मंशानुसार जिले में नरवाई (फसल अवशेष) जलाने की घटनाओं की रोकथाम हेतु कृषि अभियांत्रिकी विभाग द्वारा नरवाई प्रबंधन हेतु उपयोगी यंत्रों जैसे मल्चर तथा श्रेडर का किसानों के मध्य प्रचार-प्रसार किया जाकर इनके उपयोग के बारे में कृषकों को जागरूक किया जा रहा है।

किसानों को समझाइश दी जा रही है कि वे फसल अवशेषों को न जलाएं बल्कि इन यंत्रों का उपयोग करके उन्हें मिट्टी में ही मिला दें, जिससे मिट्टी में (1) कार्बनिक तत्वों की वृद्धि होती है, (2) लाभदायी सूक्ष्म जीवों की संख्या में वृद्धि होती है, (3) मृदा कड़क होने से बच जाती है जिससे जल धारण क्षमता में वृद्धि होती है। साथ ही फसल अवशेषों को न जलाने से पर्यावरण प्रदूषण को कम करने में सहायता मिलती है।

कृषक श्री सतनाम पंढरी, ग्राम बरूड़ विकासखंड खरगोन तथा ग्राम गंधावड़ के कृषक श्री महेन्द्र पाटीदार के खेत में मल्चर मशीन चलाकर मक्के की कड़बी (फसल अवशेषों) को पीसकर वहीं खेत में मिला दिया गया, जिसे वहां उपस्थित कृषकों द्वारा देखा गया। कृषकों द्वारा बताया गया कि इस मशीन का उपयोग करने से उन्हें खेत में आग लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

कामयाब किसान की कहानी

अवध किशोर ने खेती को लाभकारी व्यवसाय में बदला

दतिया (कृषक जगत)। जिले के ककरउआ गाँव के किसान श्री अवध किशोर कुशवाहा ने मेहनत और आधुनिक कृषि तकनीकों से खेती को लाभकारी व्यवसाय में बदलकर एक मिसाल कायम की है। अवध किशोर हर साल गेहूं, धान, सरसों और मूंगफली जैसी फसलों की बुआई करते हैं और उनकी वार्षिक आय अब 3 से 4 लाख रुपये तक पहुंच गई है।

किसान श्री अवध किशोर ने बताया कि उनकी सफलता में विभिन्न योजनाओं का अहम योगदान रहा है। खासकर सोलर पंप योजना ने खेतों में सिंचाई की सुविधा बढ़ाई और उनकी पैदावार में वृद्धि की। साथ ही, वे घर पर जैविक खाद भी बनाते हैं, जिससे उनकी खेती प्राकृतिक और पर्यावरण के अनुकूल बनी हुई है।

अवध किशोर कुशवाहा ने कहा, सरकार की योजनाओं और अपने प्रयासों के मेल से ही मैंने यह उपलब्धि हासिल की है। मैं मध्य प्रदेश सरकार का धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने किसानों के लिए ऐसे साधन और अवसर उपलब्ध कराए। इससे मेरी आय बढ़ी है। अवध किशोर की कहानी इस बात का प्रमाण है कि मेहनत, सही जानकारी और सरकारी योजनाओं का सही उपयोग मिलकर किसी भी किसान के जीवन को बदल सकता है।

संतोष ने अपनाया पराली प्रबंधन का आधुनिक तरीका

श्योपुर (कृषक जगत)। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा द्वारा पराली प्रबंधन को लेकर लगातार चलाए जा रहे जनजागरूकता अभियान का सकारात्मक असर अब ज़मीनी स्तर पर दिखने लगा है। जिले के किसान आधुनिक तकनीकों को अपनाकर पर्यावरण संरक्षण में अपनी भागीदारी निभा रहे हैं।

इसी कड़ी में कराहल विकासखण्ड के ग्राम खिरखिरी के किसान श्री संतोष धाकड़ ने पराली जलाने के बजाय सुपर सीडर मशीन से पराली का समुचित प्रबंधन किया है, वे न सिर्फ धान फसल की कटाई कर रहे हैं, बल्कि चने एवं गेहूं की बुवाई के लिए भी सुपर

सीडर का उत्तम उपयोग कर रहे है। श्री संतोष बताते हैं कि सुपर सीडर से पराली खेत में ही मिल जाती है, जिससे मिट्टी की उर्वरक क्षमता बढ़ती है और अगली फसल के लिए ज़मीन उपजाऊ रहती है।

कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा द्वारा किसानों को निरंतर समझाया जा रहा है कि पराली जलाने से न केवल पर्यावरण प्रदूषित होता है बल्कि मिट्टी के पोषक तत्व भी नष्ट हो जाते हैं। प्रशासन की सतत जागरूकता से अब किसान वैज्ञानिक तरीके अपना रहे हैं, जिससे खेत उपजाऊ होने के साथ वायु प्रदूषण पर भी नियंत्रण मिल रहा है। श्री संतोष धाकड़ जैसे किसानों की यह पहल अन्य किसानों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन रही है।

कृषि विभाग द्वारा खाद, बीज दुकानों का निरीक्षण

श्योपुर (कृषक जगत)। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा के निर्देशानुसार विजयपुर में गत दिनों 5 खाद-बीज दुकानों का निरीक्षण किया गया, जिसमें मे. राजाराम खाद भंडार विजयपुर, रामभजन चिरोंजी लाल विजयपुर, कम्बोज कृषि सेवा केन्द्र विजयपुर, किसान बीज भंडार विजयपुर, प्राथमिक कृषि साख सहकारी संस्था मर्यादित विजयपुर शामिल हैं।

इन दुकानों से बीज के 4 एवं उर्वरक के 2 नमूने लिए गए जिन्हें विश्लेषण हेतु प्रयोगशाला भेजा गया। विक्रेता फर्म राजाराम खाद भंडार विजयपुर पर भाव सूची एवं स्टॉक का प्रदर्शन नहीं पाए जाने तथा कम्बोज कृषि सेवा केन्द्र विजयपुर पर बीज लाइसेंस में पी.सी. दर्ज नहीं होने पर कारण बताओ नोटिस जारी किया गया। निरीक्षण के दौरान वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी विकासखण्ड विजयपुर श्री विष्णु राठौर, श्री भूपेन्द्र धाकड़ एवं कृषि विस्तार अधिकारी श्री धर्मा सेमले उपस्थित रहे।

कृषक जगत की सदस्यता हेतु संपर्क करें
शैलेन्द्र फरक्या, बलराम एंड ब्रदर्स, पिपलिया मंडी, जिला-मन्दसौर, मो. : 9893189345
सतीशचन्द्र शर्मा, मे. शर्मा एग्रो एजेन्सी, पनवाड़ी, जिला-शाजापुर, मो. : 9893296531

समस्या– मैं अपने बगीचे में चीकू लगाना चाहता हूं चीकू कब लगाया जा सकता है, कौन सी जाति, कृपया विस्तार से बतायें?

– सुधीर वर्मा

समाधान– आप चीकू अपने बगीचे में

लगाना चाहते हैं इसे आप लगा सकते हैं चाही गई जानकारी पढ़ें और करें–

• लगाने का उपयुक्त समय जुलाई से सितम्बर माह है।

• जातियों में काली पत्ती, क्रिकेटबाल, बारहमासी, ओवल, कलकत्ता स्पेशल, पीली पत्ती, भूरी पत्ती तथा छतरी।

• मई माह में 1×1×1 मीटर के लम्बे, चौड़े तथा गहरे गड्ढे तैयार करें पौध से पौध की दूरी 8 मीटर हो।

• गड्ढों में 40 किलो गोबर की खाद, 2 किलो सिंगल सुपर फास्फेट भी मिलायें।

• अच्छी जाति के तैयार पौधे का रोपण समय से किया जाये।

• चीकू वर्षा आधारित तथा सिंचित दोनों दशा में लगाया जा सकता है सिंचाई करने पर उत्पादन अच्छा होता है।

• चीकू के पौधों के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें–

– उप संचालक उद्यानिकी
पचमढ़ी, जिला– नर्मदापुरम्

– प्रभारी शासकीय गार्डन, पचमढ़ी
जिला– नर्मदापुरम्

समस्या– मटर पर तापमान का प्रभाव 22 डिग्री सेल्सियस पर होता है यह तापमान हमारे यहां नवम्बर में आता है। मटियार दोमट भूमि में सिंचाई से पानी भर जाता है सुझाव दें?

– देवराज सिंह

समाधान – मटर पर तापक्रम के प्रभाव के विषय में आपका प्रश्न है जहां आप 22 डिग्री सेल्सियस पर चिंतित हैं जो आपके यहां नवम्बर तक आता है। मटर हो या कोई अन्य फसल केवल तापमान के कारण उत्पादन प्रभावित नहीं होता है। तापमान के साथ–साथ भूमि की नमी का भी उतना ही असर होता है। मटर एक ठंडी एवं शुष्क जलवायु की फसल है कड़ी सर्दी तथा पाले से फूल एवं फल दोनों प्रभावित हो सकते हैं। बुआई के समय भूमिगत तापमान यदि अधिक हो तो अंकुरण प्रभावित होता है तथा पौधे कमजोर होते हैं दूसरी और कम तापमान से भी अंकुरण प्रभावित होता है यदि भूमिगत तापमान 15 से 22 डिग्री सेल्सियस हो तो सबसे उत्तम अंकुरण होता है। बर्शते भूमि में नमी पर्याप्त हो तुलनात्मक अधिक तापमान में बढ़वार अच्छी होती है। मटर ही नहीं रबी की प्रत्येक फसलों को लम्बी अवधि के शीत दिवस होने से उत्पादन पर सकारात्मक असर होता है। आपकी भूमि मटियार दोमट है सिंचाई पर नियंत्रण करना जरुरी होगा अनियंत्रित सिंचाई से खेत में दल–दल की स्थिति बन जाती है जिससे पौधों की दैहिक क्रिया पर असर होता है बढ़वार गति मंद पड़ जाती है सिंचाई की क्यारी पद्धति या स्प्रिंकलर से सिंचाई करना अधिक अच्छा रहेगा। मटर बुवाई का उत्तम समय 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर माना गया है आप नवम्बर में लगाये पानी की व्यवस्था तो आपके पास उपलब्ध ही है।

समस्या– हमें जानकारी देने की कृपा करें कि गरकिन की फसल हमारे यहां हो सकती है या नहीं रायपुर के आसपास अधिक हो रही है लगाने का उपयुक्त समय क्या हैं?

– नारायण पवार

समाधान– आपने गरकिन के विषय में जानकारी चाही है। गरकिन कद्दूवर्गीय फसल खीरा – ककड़ी के जैसे ही एक है जो खाने में स्वादिष्ट तथा खीरा जैसी है। पौष्टिक खीरा से करीब चौथाई छोटी–छोटी होती है। छत्तीसगढ़ क्षेत्र में स्थानीय तौर पर इसे लगाया जाता है। रायपुर में ज्यादा प्रचलित है आपके क्षेत्र में इसे सफलता से लगाया जा सकता है। निकट भविष्य में कृषक जगत में इनके बारे में विस्तार से जानकारी का प्रकाशन प्रस्तावित है।

समस्या – क्या बथुआ की खेती भी की जा सकती है क्योंकि इसके औषधि गुणों के कारण उपयोगी हैं नई जाति हो तो बतायें?

– रघुकुल राठौर

समाधान– आपने बिल्कुल ठीक लिखा है। गेहूं तथा अन्य रबी फसलों के साथ उगने वाला

बथुआ में अनेकों औषधि गुण हैं इसमें विटामिन ए एवं सी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है आंतों तथा कब्ज रोगों में बहुत लाभदायक होता है आप चाहें तो थोड़े क्षेत्र में बथुआ लगा सकते हैं इसका उपयोग सब्जी–रायता में भी होता है। बवासीर रोग में भी लाभकारी पाया गया है।

• सभी प्रकार की भूमि में पैदा किया जा सकता है। बालुई दोमट भूमि सबसे अच्छी होती है। • खेत की तैयारी अन्य रबी फसलों की तरह की जाये। • बुवाई सितम्बर के आखिरी सप्ताह से लेकर मार्च प्रथम सप्ताह तक की जा सकती है। • एक से डेढ़ किलो बीज प्रति हेक्टर पर्याप्त होता है। बीज को गोबर की खाद में मिलाकर बुवाई की जा सकती है। • कतार से कतार 30 सेमी।

• इसकी जाति पूसा बथुआ 1 इसकी पत्तियां बैंगनी हरी पत्तियाँ 10.5 सेमी तथा चौड़ाई 3 सेमी होती है। तना भी बैंगनी रंग का होता है पहली कटाई बुआई को 40–50 दिन बाद की जा सकती है। • यूरिया 50–60 किलो खड़ी फसल में 2–3 भागों में बांटकर टापड्रेसिंग करें। • पहली सिंचाई 12–15 दिनों बाद करें।

• बीज आने के पहले कटाई बंद कर दें।

समस्या– मैं अंगूर लगाना चाहता हूं क्या हमारे क्षेत्र में पैदा किया जा सकता है। विधि भी लिखें? – रामाजी पाटीदार

समाधान– आज से दो–तीन दशक पहले अंगूर की खेती केवल महाराष्ट्र तक ही सीमित

थी परंतु खेती को लाभकारी बनाने के प्रयास में नगदी फसलों के विस्तार में गति आई और अंगूर जैसी फसल भी हमारे प्रदेश में सफलता से आपके यहां भी लगाई जा सकती है। आप निम्न तकनीकी अपनायें।

• पौध लगाने का उचित समय नवम्बर से जनवरी होता है। • जल्दी ही खेत में 60×60×60 मीटर के लम्बे, चौड़े तथा गहरे गड्ढे तैयार करा लें किस्मों के अनुरुप गड्ढ़ों की दूरी 3×3 मीटर से लेकर 7×3 मीटर तक रखी जा सकती है।

• तारों से इसकी बेल को चढ़ाने के लिये मंडप तैयार किया जाता है पड़ोस के जिले रतलाम में स्वयं जाकर इनको देखें तथा प्रशिक्षण भी लें क्योंकि फलन हेतु बेलों को विशेष स्थिति में कांटा/छांटा जाता है।

• प्रत्येक गड्ढ़ों में 40 किलो गोबर की खाद, 1 किलो सिंगल सुपर फास्फेट तथा 500 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश भरें।

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान

कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100,2554864

कृषक जगत
बागवानी सीरीज

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक	सब्जियों में पौध संरक्षण	मशरूम एक लाभ अनेक	मिर्च की उन्नत खेती	केला उत्पादन	गुलाब बहुरंगी संशोधित संस्करण
रु. 95	रु. 75	रु. 45	रु. 55	रु. 70	रु. 75
कोड : 016	कोड : 017	कोड : 019	कोड : 020	कोड : 025	कोड : 027

पपीता	अदरक	फलों की खेती	सजाएं फूलों से बगिया	घर की बगिया
रु. 55	रु. 55	रु. 75	रु. 65	रु. 95
कोड : 031	कोड : 032	कोड : 040	कोड : 041	कोड : 050

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए . किताब कोड नं. पर ✔ निशान लगाएं
016 017 019 020 025 027 031 032 034 040 041 050
नाम
ग्राम पोस्ट तह.
जिला फोन/मोबा.
कुल राशि ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या
संलग्न ड्राफ्ट नं. मनी आर्डर रसीद क्र. वी.पी. भेजें
संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियां खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.
कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम
14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल - 462011
फोन : 0755-4248100, 2554864, मो.: 9826255861, Email-info@krishakjagat.org
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर (म.प्र.) मो. : 9826021837

गुणों से भरपूर सुपारी पुदीना

प्राकृतिक ताजगी और औषधीय शक्ति

● डॉ. दीपक हरि रानडे
● डॉ. मनोज कुमार कुरील ● डॉ. स्मिता अग्रवाल
कृषि महाविद्यालय, खंडवा

सुपारी पुदीना (स्पीयर मिंट – Mentha spicata) अपने ताजगी और सुगंध के कारण सदियों से हमारे जीवन का हिस्सा रहा है। इसे भारतीय और विश्वभर के रसोईघर, आयुर्वेदिक दवाओं और हर्बल उपचारों में प्रमुखता से उपयोग किया जाता है। इसकी नुकीली, ताजगी से भरी पत्तियाँ न केवल स्वाद और खुशबू बढ़ाती हैं, बल्कि शरीर और मस्तिष्क के लिए अद्भुत लाभ भी प्रदान करती हैं। स्पीयर मिंट का नाम इसके पत्तियों के नुकीले आकार (spear-like) और तेज़ खुशबू से जुड़ा है। इसे ताजगी, शीतलता और स्वास्थ्य का प्रतीक भी माना जाता है। आज यह न सिर्फ खाद्य और पेय पदार्थों में, बल्कि सौंदर्य प्रसाधन, दंत-मंजन, तेल और इत्र उद्योग में भी अपनी जगह बना चुका है। यह पौधा कृषि महाविद्यालय, खंडवा में लगा हुआ है।

स्वाद और सुगंध में विशेष

स्पीयर मिंट की पत्तियों का स्वाद हल्का मीठा, ताजगी से भरा और मन को शीतल करने वाला होता है। इसका प्राकृतिक सुगंध मन और मस्तिष्क को ताजगी देती है। चाय, हर्बल शरबत, सलाद और चटनी में इसका उपयोग खाने का स्वाद ही नहीं बढ़ाता, बल्कि भोजन को पचाने में भी मदद करता है। ताजगी के अलावा, इसकी सुगंध मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद है। तनाव और थकान के समय इसकी खुशबू से मस्तिष्क को ताजगी मिलती है, ध्यान केंद्रित करना आसान होता है और मानसिक थकान कम होती है।

औषधीय महत्व

सुपारी पुदीना सिर्फ स्वाद और सुगंध तक सीमित नहीं है। इसके पत्तों और तेल में कई औषधीय गुण मौजूद हैं, जो इसे आयुर्वेद और हर्बल उपचार में अनमोल बनाते हैं।

पाचन में सहायक

पुदीना पेट की गड़बड़ियों को दूर करता है। यह भूख बढ़ाने, अपच कम करने और गैस और ब्लोटिंग को नियंत्रित करने में मदद करता है। इसके ताजे पत्तों से बनी चाय या शरबत पेट को हल्का और आरामदायक महसूस कराता है।

सर्दी, खाँसी और श्वसन स्वास्थ्य

सुपारी पुदीना सर्दी और खाँसी में राहत देता है। इसमें प्राकृतिक ठंडक और ताजगी होती है, जो गले की जलन कम करती है और श्वसन मार्ग को आराम देती है। हर्बल चाय या पुदीना अर्क गले को शांत करता है और सर्दियों में शरीर को गर्म रखता है।

त्वचा और सौंदर्य में उपयोग

पुदीना का तेल और अर्क त्वचा पर लगाने से ताजगी और ठंडक मिलती है। यह मुहांसों और जलन को कम करता है, त्वचा को हाइड्रेट करता है और उसे स्वस्थ बनाता है। साबुन, क्रीम और फेस पैक में पुदीना का उपयोग त्वचा की चमक बढ़ाने और उसे जीवंत रखने के लिए किया जाता है।

मानसिक स्वास्थ्य और ताजगी

स्पीयर मिंट मानसिक थकान और तनाव को कम करता है। इसकी ताजगी से भरी सुगंध मस्तिष्क को उत्तेजित करती है, एकाग्रता बढ़ाती है और मूड को बेहतर बनाती है। सुबह के समय पुदीना का सेवन या ताजे पत्तों की खुशबू मानसिक ताजगी के लिए लाभकारी होती है।

एंटीऑक्सीडेंट और डिटॉक्स गुण

सुपारी पुदीना में एंटीऑक्सीडेंट गुण पाए जाते हैं, जो शरीर को हानिकारक मुक्त कणों से बचाते हैं। यह शरीर को डिटॉक्स करने, ऊर्जा बढ़ाने और इम्यून सिस्टम को मजबूत करने में मदद करता है।

संक्षेप में

स्पीयर मिंट हल्का, मीठा और सुगंधित होता है, जिससे यह रोजमर्रा के खाने, चाय और सौंदर्य उत्पादों में अधिक प्रिय है। पेपरमिंट (सामान्य पुदीना) में मेंथोल अधिक होने के कारण यह औषधीय उत्पादों और तेल उद्योग के लिए अधिक उपयोगी है।

खाद्य और औषधीय उपयोग

स्पीयर मिंट का उपयोग विविध तरीकों से किया जाता है।

ताजा पत्तियाँ : चाय, शरबत, सलाद, चटनी और डेसर्ट में ताजगी और स्वाद बढ़ाने के लिए।

सूखी पत्तियाँ: पाउडर या मसाले के रूप में इस्तेमाल।

तेल (मेंथोल युक्त) : साबुन, क्रीम, इत्र, दंत-मंजन और हर्बल तेल में।

तैयार उत्पाद: पुदीना पेस्ट, चाय, पुदीना बाम, कैंडल और हर्बल ड्रिंक।

स्पीयर मिंट की बहुपयोगिता इसे केवल रसोई तक सीमित नहीं रहने देती, बल्कि यह औषधीय और सौंदर्य उद्योग में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

जीवनशैली में महत्व

स्पीयर मिंट के सेवन से न केवल स्वास्थ्य लाभ होते हैं, बल्कि यह जीवनशैली में ताजगी और ऊर्जा भी जोड़ता है। सुबह-सुबह पुदीना वाली हर्बल चाय या शरबत लेने से दिनभर ताजगी बनी रहती है। थकान और तनाव के समय इसकी सुगंध मस्तिष्क को तरोताजा कर देती है। इसके अलावा, पुदीना की खुशबू और स्वाद मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद है। यह ध्यान और मानसिक संतुलन बनाए रखने में मदद करता है।

सुपारी पुदीना के फायदे एक नजर में

- पाचन तंत्र को मजबूत बनाता है
- सर्दी-खाँसी और श्वसन स्वास्थ्य में सहायक
- त्वचा को स्वस्थ, हाइड्रेट और चमकदार बनाता है
- मानसिक तनाव और थकान कम करता है
- एंटीऑक्सीडेंट और डिटॉक्स गुणों से भरपूर
- सौंदर्य प्रसाधन, तेल और हर्बल उत्पादों में बहुपयोगी
- स्वाद और सुगंध से भोजन और पेय पदार्थों में ताजगी

स्पीयर मिंट और सामान्य पुदीना में अंतर

स्पीयर मिंट (Mentha spicata) और सामान्य पुदीना (Mentha piperita या पेपरमिंट) दोनों ही लोकप्रिय हर्बल पौधे हैं, लेकिन इनके स्वाद, खुशबू और उपयोगिता में महत्वपूर्ण अंतर है।

विशेषता	स्पीयर मिंट (सुपारी पुदीना)	सामान्य पुदीना (पेपरमिंट)
सुगंध और स्वाद	हल्का मीठा, ताजगी से भरा, नर्म और सुगंधित	तीखा, तेज और मसलदार स्वाद, हल्का कड़वा
तेल में मेंथोल की मात्रा	कम मेंथोल (90.5-1%)	अधिक मेंथोल (91.5-2%)
पत्तियों का आकार	लंबी, नुकीली और सपाट	मोटी, गहरी हरी और अक्सर मरोड़दार
उपयोगिता	हर्बल चाय, सलाद, चटनी,सौंदर्य प्रसाधन, हल्के हर्बल उत्पाद	दंत-मंजन, इत्र, तेल, औषधीय उत्पाद और ठंडी हर्बल ड्रिंक
स्वास्थ्य लाभ	पाचन सुधार, ताजगी, त्वचा और मानसिक स्वास्थ्य	श्वसन स्वास्थ्य, सर्दी-खाँसी, ठंडक और दर्द निवारण
सुगंध का असर	हल्का और मधुर, मानसिक ताजगी के लिए बेहतर	तेज़ और तीखा, तनाव और सिरदर्द में सहायक

नाश्ते से बच्चों का प्रदर्शन अच्छा

पोषक आहार लेना जरूरी

नाश्ते में बच्चों को कुछ भी देना अक्लमंदी नहीं है। सिर्फ मिठाई या चिप्स जैसे खाद्य वस्तुओं से कोई फर्क नहीं पड़ता। इसकी बजाय पोषक तत्वों से युक्त भोजन दिया जाना चाहिए। शोध में ज्यादातर बच्चों में ऐसा ही पाया गया।

सीखने की क्षमता में सुधार

● स्कूल से पहले नाश्ते से पढ़ने-सीखने की क्षमता में दिखा गजब का सुधार।

● शोधकर्ताओं ने कहा, नाश्ता करने वाले बच्चों ने दोगुने अंक पाए।

सुबह का नाश्ता सेहत के लिए फायदेमंद तो है ही, लेकिन स्कूल जाने वाले बच्चों के लिये यह सोने पर सुहागा से कम नहीं। दरअसल, ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने कहा है कि स्कूल जाने से पहले नाश्ता करने वाले बच्चे पढ़ाई- लिखाई में ज्यादा बेहतर प्रदर्शन करते हैं। कार्डिफ यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने पाया कि खाली पेट पढ़ने-सीखने वाले बच्चों की तुलना में नाश्ता कर कक्षाओं में जाने वाले बच्चों ने परीक्षाओं और टेस्ट में दोगुने के करीब अंक पाए।

शोधकर्ताओं ने इस आधार पर कहा कि ब्रिटिश स्कूलों में सरकार की ओर से मिड डे मील जैसी योजना बंद करने का असर

बच्चों को सीखने की क्षमता पर पड़ सकता है। इस तरह स्कूल बजट में कमी बच्चों के अकादमिक स्तर पर उलटा असर डाल सकती है। शोधकर्ता हन्ना लिटिलकॉट ने कहा कि नाश्ता करके जाने से स्कूल में बच्चों की एकाग्रता बेहतर रहती है।

शोधकर्ताओं ने पाया कि 11 बजे के आसपास जब छात्रों का इम्तहान लिया गया तो वे बिना नाश्ता करके परीक्षा देने वालों की तुलना में दोगुना अंक पाए। उन्होंने कहा कि फल, सब्जियों के साथ मिठाई व चॉकलेट जैसी खाद्य वस्तुओं का निश्चित तौर पर शैक्षिक स्तर पर सकारात्मक असर पड़ा। बच्चे कम बीमार पड़े, स्कूल में उनका मन भी लगा और क्लास में सीखी हुई बातों को लेकर उनकी याददाश्त भी बेहतर हुई। लंदन इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन में समाजशास्त्र के प्रोफेसर क्रिस बोनेल ने कहा कि अब ब्रिटेन के ज्यादातर स्कूल बच्चों को नाश्ते की पेशकश करते हैं। इससे बच्चों की सेहत के साथ शैक्षिक प्रदर्शन को भी बेहतर बनाने में मदद मिलती है।

पाक्षिक पंचांग

3 से 16 नवम्बर 2025
विक्रम संवत् 2082
कार्तिक शुक्ल 13 से आगहन कृष्ण 12 तक

दि.	माह	वार		तिथि/त्यौहार
3	नवम्बर	सोम	कार्तिक शुक्ल	13 प्रदोष व्रत, पंचक
4	नवम्बर	मंगल	----------	14 बैकुंठ चतुर्दशी पंचक 11.20 दिन तक
5	नवम्बर	बुध	----------	15 स्ना.दा. व्रत पूर्णिमा
6	नवम्बर	गुरु	अगहन कृष्ण	1
7	नवम्बर	शुक्र	----------	2
8	नवम्बर	शनि	----------	3 गणेश चतुर्थी
9	नवम्बर	रवि	----------	4
10	नवम्बर	सोम	----------	5/6
11	नवम्बर	मंगल	----------	7
12	नवम्बर	बुध	----------	8 काल भैरवाष्टमी
13	नवम्बर	गुरु	----------	9
14	नवम्बर	शुक्र	----------	10
15	नवम्बर	शनि	----------	11 उत्पन्ना एकादशी
16	नवम्बर	रवि	----------	12

123Certificates

पराली रोकथाम के लिए प्रचार रथ रवाना

भिण्ड (कृषक जगत)। पर्यावरण एवं मनुष्य के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए पराली (नरवाई) प्रबंधन के लिए प्रदेश में जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में जिला कलेक्टर श्री किरोड़ी लाल मीना ने नरवाई प्रबंधन जागरूकता हेतु प्रचार रथ को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया।

यह प्रचार रथ जिले के सभी विकासखण्डों में पूरे नबम्वर माह तक भ्रमण करेगा।

विशेषकर धान फसल वाले क्षेत्रों में किसानों को नरवाई (पराली) नहीं जलाने के संबंध में जागरूकता एवं प्रचार-प्रसार करेगा। रथ के माध्यम से कृषकों को सुपर सीडर, हैप्पी सीडर,स्मार्ट सीडर का उपयोग कर धान की कटाई पश्चात सीधे गेहूं एवं चना की बोनी करने की समझाइश दी जायेगी। इस दौरान उप संचालक कृषि श्री के. के. पाण्डेय एवं सहायक कृषि यंत्री सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

किसानों को प्राथमिकता के आधार पर भुगतान हो : श्रीमती सिंह

रतलाम मण्डी का निरीक्षण

रतलाम (कृषक जगत)। कलेक्टर श्रीमती मिशा सिंह ने रतलाम मंडी में भावांतर भुगतान योजनांतर्गत खरीदी प्रारंभ के अवसर पर मंडी का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। कलेक्टर ने मंडी सचिव एवं एसडीएम को निर्देश दिये कि खरीदी का भुगतान तत्काल हो इसके लिए बैंकों के शाखा प्रबंधकों और उनके नोडल अधिकारियों के सीधे संपर्क में रहकर किसानों को प्राथमिकता के आधार पर भुगतान करवायें। बैंकर्स की सूची मंडी कार्यालय में चस्पा कर दें, जिससे उनसे सीधे संपर्क किया जा सके।

बैंकों के माध्यम से भावान्तर योजना अंतर्गत किसानों को होने वाले लेन-देन को बिना किसी देरी के और प्राथमिकता के आधार पर जल्द से जल्द निपटाया जाए। नोडल अधिकारी खरीदी की सतत मॉनिटरिंग करे। किसानों को किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं होना चाहिए। इस दौरान जिले की उप संचालक कृषि श्रीमती नीलम सिंह चौहान भी मौजूद थीं।

गेहूं, चना का प्रजनक बीज बिक्री के लिए उपलब्ध

भिंड (कृषक जगत)। प्रभारी अधिकारी विशेष कृषि अनुसंधान केंद्र भिण्ड ने गत दिनों बताया कि राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय ग्वालियर के अंतर्गत विशेष कृषि अनुसंधान केन्द्र इटावा रोड, भिण्ड पर गेहूं की उन्नतशील किस्म टीआरवीडब्ल्यू-155 प्रजनक बीज व एचआई-1544 राजविजय बीज तथा चना की उन्नतशील किस्में आरवीजी-202, जेजी-24 विक्रय हेतु उपलब्ध है। ये उन्नतशील किस्में किसान भाई अपने खेत पर लगाते हैं, तो यह बीज पाँच से छः साल तक उपयोग कर सकते हैं। हर साल नया बीज लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी एवं इस बीज का हर साल उत्पादन बढ़ता जाता है। गेहूं की उन्नतशील किस्में टीआरवीडब्ल्यू-155 व गेहूँ-1544 तथा चना आरवीजी-202 राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय ग्वालियर द्वारा विकसित की गई है व किस्म जेजी-24 चना, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर से विकसित की गई है। अधिक जानकारी के लिए 9329622315 पर सम्पर्क करें।

कृषि सखियों को प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षण

बालाघाट। कृषि विज्ञान केंद्र बड़गांव, बालाघाट में राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के तहत कृषि सखियों के लिए पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम हुआ। यह प्रशिक्षण वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एस. आर. धुवारे के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। उद्घाटन सत्र में डॉ. घनश्याम देशमुख, अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय बालाघाट; डॉ. अतुल श्रीवास्तव, सहायक प्राध्यापक; श्री विनय धुर्वे, सहायक संचालक कृषि डॉ. जगदीश कुटारिया, टीए आत्मा किरनापुर; श्री अजय बिजेवार, टीए आत्मा लांजी; तथा श्री ए.के. चार्ल्स एवं अन्य अतिथि उपस्थित रहे। डॉ. धुवारे ने कृषि सखियों को जीवामृत, बीजामृत, घनजीवामृत, नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र, दशपर्णी काढ़ा जैसे प्राकृतिक घटकों की जानकारी दी। श्री विनय धुर्वे ने किसानों से खेतों में पराली न जलाने, जैविक खाद बनाने और प्राकृतिक खेती अपनाने का आग्रह किया।

कार्यक्रम का संचालन मौसम वैज्ञानिक श्री धर्मेन्द्र आगाशे ने किया।

सिवनी में धन-धान्य कृषि योजना एवं दलहन आत्मनिर्भरता मिशन का प्रसारण

सिवनी। कृषि विज्ञान केंद्र, सिवनी एवं कृषि विभाग के संयुक्त तत्वावधान में प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना एवं दलहन आत्मनिर्भरता मिशन के शुभारंभ कार्यक्रम का सजीव प्रसारण किया गया।

कार्यक्रम के दौरान केंद्र परिसर के दर्पण सभागार में पूर्व प्रदेश मंत्री श्री राकेश बैस, जिला अध्यक्ष किसान मोर्चा श्री शिव कुमार सनोडिया सहित महिला एवं पुरुष किसान उपस्थित रहे। वहीं लखनादौन विकासखंड में सांसद श्री फगन सिंह कुलस्ते एवं श्रीमती मीना बिसेन की उपस्थिति में लाइव प्रसारण देखा गया।

कृषि वैज्ञानिक डॉ. निखिल सिंह ने रबी फसलों की तकनीक और प्राकृतिक खेती के महत्व पर मार्गदर्शन दिया। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. शेखर सिंह बघेल के निर्देशन में हुआ।

कार्यक्रम की सफलता में डॉ. के. के. देशमुख, डॉ. जी. के. राणा, इंजी. कुमार सोनी, डॉ. के. पी. एस. सैनी सहित कृषि विभाग के अधिकारियों का सहयोग रहा। आयोजन में लगभग 400 किसान शामिल हुए।

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
- वार्षिक रु. 600/-
- दो वर्ष रु. 1000/-
- तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से **'कृषक जगत'** - प्रति सप्ताह ☐ भोपाल ☐ जयपुर ☐ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम ....
....
ग्राम .... पो. ....
डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : ....
वि.ख. .... तह. ....
जिला .... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य ....
शिक्षा .... भूमि .... उम्र ....
ट्रैक्टर/मॉडल .... फोन/मो. ....
ई-मेल ....
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये .... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. .... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php

Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793, Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.),मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

नर्मदापुरम में सुपर सीडर, मल्चर मशीन का प्रदर्शन

नर्मदापुरम (कृषक जगत)। कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना के निर्देशन में जिले में किसानों को नरवाई (फसल अवशेष) प्रबंधन हेतु जागरूक करने का अभियान निरंतर जारी है। इसी क्रम में विकासखंड केसला के ग्राम सोमलवाड़ाखुर्द एवं चादौन में सुपर सीडर एवं मल्चर मशीन का प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम में अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) इटारसी श्री नीलेश शर्मा, तहसीलदार इटारसी श्रीमती सुनीता साहनी, सहायक कृषि यंत्री श्री सी.एस. बरकड़े, उपयंत्री श्री शोभित ठवरे, वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी श्री सुनील उइके तथा कृषि विस्तार अधिकारी श्रीमती भाग्यश्री चौधरी, ग्राम सोमलवाड़ाखुर्द और चादौन के कृषक श्री आलोक वर्मा, उमाशंकर वर्मा, रमाशंकर वर्मा, अनिल चौधरी, रामकुमार महतो, राहुल महतो सहित अन्य किसान भी उपस्थित हुए।

किसानों को खेत में कम्बाइन हार्वेस्टर से धान कटाई के बाद मल्चर मशीन एवं उसके बाद सुपर सीडर मशीन के उपयोग का प्रदर्शन दिखाया गया। इस अवसर पर एस.डी.एम. श्री नीलेश शर्मा ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि नरवाई जलाने से भूमि की गुणवत्ता घटती है और पर्यावरण को हानि पहुँचती है, अत: किसान नरवाई प्रबंधन की आधुनिक तकनीकों को अपनाएं।

सहायक कृषि यंत्री श्री सी.एस. बरकड़े ने बताया कि सुपर सीडर, मल्चर और बेलर जैसी मशीनें शासन द्वारा 50 प्रतिशत अनुदान पर उपलब्ध कराई जा रही हैं, जिनका लाभ किसान ऑनलाइन आवेदन कर प्राप्त कर सकते हैं।

संतरा किसानों को मिले बेहतर लाभ, हुई कार्यशाला

आगर मालवा (कृषक जगत)। आगर जिले के संतरा उत्पादक किसानों को बेहतर लाभ दिलाने और उनके उत्पादों को बाजार तक पहुंचाने के उद्देश्य से मध्य प्रदेश औद्योगिक विकास निगम द्वारा जिला पंचायत सभागार में 'संतरा प्रसंस्करण एवं मूल्यवृद्धि कार्यशाला' का आयोजन किया गया। जिसमें स्व-सहायता समूहों की महिला सदस्य, किसान उत्पादक कंपनियों के पदाधिकारियों एवं संतरा उत्पादक किसानों ने उत्साहपूर्वक भागीदारी की। कार्यशाला में मध्य प्रदेश औद्योगिक विकास निगम की सलाहकार सुश्री इशिता चौहान, सुश्री श्वेता पांडे एवं श्री कुलदीप यादव द्वारा प्रतिभागियों का उन्मुखीकरण किया गया। इस अवसर पर जिला पंचायत की मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्रीमती नंदा भलावे कुशरे, श्री जितेंद्र सिंह सेंगर, जिला उद्यानिकी अधिकारी श्री अर्जुन सिंह राजपूत, जिला परियोजना प्रबंधक (आजीविका मिशन) श्री संजय सक्सेना, सीईओ जनपद आगर श्री मोहन लाल स्वर्णकार, उद्यानिकी विभाग के श्री अशोक झंकारे तथा जिला प्रबंधक श्री मुकेश पंवार सहित आजीविका मिशन एवं उद्यानिकी विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

ओउम्
– प्रो. सूरज गुर्जर
s/o अशोक गुर्जर (पूर्व सरपंच)
मो. : 8462872136, 8226072879

सौरभ
कृषि सेवा केन्द्र
सभी प्रकार की कृषि दवाईयां
उन्नत बीज, खाद एवं स्प्रे पंप के विक्रेता
अजय टॉकीज के सामने, पिपलिया मंडी, जिला-मंदसौर (म.प्र.)

पटवारी एग्रो एजेन्सी
:: वितरक ::
◆ कलश सीड्स लि. ◆ बायोस्टेट इंडिया लि. ◆ बॉयर कॉप साइंस ◆ धानुका एग्रीटेक लि.
◆ एफ.एम.सी. इंडिया प्रा.लि. ◆ घरड़ा केमिकल्स लि. ◆ अतुल एग्रीटेक लि.
◆ रामा फॉस्फेट्स लि. ◆ जी.एन.एफ.सी. ◆ इंसेक्टीसाइड्स इंडिया लि. ◆ बीएएसएफ
◆ डयूपॉन्ट इंडिया लि. ◆ क्रिस्टल क्राप साइंस ◆ डाउएग्रो साइंसेस ◆ एग्री सर्च इंडिया
◆ मंशा इंडिया लि. ◆ स्वाल कार्पोरेशन लि. ◆ मेघमनी आर्गेनिक्स ◆ अदामा इंडिया लि.
17, विशाल टॉवर, इंदिरा काम्पलेक्स, नवलखा चौराहा, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 2403694, 2400412, मो. : 9425077083

कपास पंजीयन के लिए पांढुर्ना किसानों को एक और मौका

(उमेश खोड़े, कृषक जगत, पांढुर्ना)। भारतीय कपास निगम (सीसीआई) द्वारा चालू खरीफ सत्र में किसानों से समर्थन मूल्य पर कपास खरीदी के लिए मोबाइल पर कपास किसान एप डाऊनलोड कर निर्धारित प्रक्रिया के माध्यम से पंजीयन की व्यवस्था की गई है। लेकिन पांढुर्ना तहसील के कई किसान स्वयं पंजीयन करने में असमर्थ हैं, क्योंकि अधिकांश के पास साधारण मोबाइल है। इसके अलावा तकनीकी अज्ञानता एवं सर्वर डाउन की समस्या के कारण पांढुर्ना तहसील कपास पंजीयन में पिछड़ी हुई है। हालांकि ऑनलाइन केंद्रों पर जाकर सशुल्क पंजीयन कराया जा सकता है। कपास पंजीयन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर कर दी गई है। ऐसे में पांढुर्ना तहसील के शेष कपास उत्पादक किसानों को पंजीयन के लिए एक और मौका मिला है।

इस संबंध में पांढुर्ना/सौंसर के सीसीआई केंद्र प्रभारी श्री के. एल. बघेल ने कृषक जगत को बताया कि सीसीआई द्वारा इस खरीफ सत्र में कपास किसान मोबाइल एप के माध्यम से पंजीयन की व्यवस्था की गई है। जिसमें किसान स्वयं भी पंजीयन कर सकता है। दो चरणों की इस प्रक्रिया में पहले चरण में किसान के आधार कार्ड और फोटो अपलोड की जाती है, जबकि दूसरे चरण में गिरदावरी, खसरा बी 2 की नकल और पावती को अपलोड किया जाता है। प्रक्रिया पूर्ण होने पर किसानों को एक कोड दिया जाता है। जिसके माध्यम से खरीदी और भुगतान किया जाएगा। दो अभी तक मात्र 236 कपास उत्पादक किसानों ने ही पंजीयन कराया है, वहीं सौंसर तहसील में 1300 किसानों ने कपास का पंजीयन कराया है। श्री बघेल ने जानकारी दी कि सीसीआई द्वारा राज्य शासन से प्राप्त वर्ष 2024 -25 (अंतिम अनुमान) में 7 जिलों के क्षेत्रच्छादन एवं उत्पादकता के आंकड़े जारी किए हैं, जिसमें पांढुर्ना जिले की उत्पादकता 7.4 क्विंटल/एकड़ दर्शाई है, जबकि धार 6.3, आलीराजपुर 5.4, खरगोन 5.7, बड़वानी 7.9, खंडवा 7.0 और बुरहानपुर 7.3 क्विंटल/एकड़ बताई गई है।

दूसरी ओर किसानों का कहना है कि जिस तरह सोसायटियों में सोयाबीन फसल के पंजीयन किए गए, उसी तरह कपास पंजीयन के लिए भी सीसीआई को कोई व्यवस्था करना चाहिए।

पांढुर्ना ब्लॉक की कृषि विस्तार अधिकारी शिवानी उइके ने बताया कि कई किसान कपास पंजीयन के लिए आए थे, लेकिन सर्वर डाउन होने से पंजीयन नहीं हो पाया। कपास पंजीयन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर तक बढ़ने से किसानों को राहत मिल गई है। अब शेष किसान अपनी कपास फसल का पंजीयन करा पाएंगे।

टीकमगढ़ में मछुआ प्रशिक्षण

टीकमगढ़ (कृषक जगत)। कलेक्टर श्री विवेक श्रोत्रिय के निर्देशानुसार सहायक संचालक मत्स्योद्योग श्रीमती मेघा गुप्ता एवं मत्स्य निरीक्षक श्री पंकज मौर्या, श्री सी.एल. कुशवाहा के द्वारा मुख्यमंत्री मछुआ समृद्धि योजना के तहत महेंद्र बाग मत्स्य बीज प्रक्षेत्र टीकमगढ़ में तीन दिवसीय मछुआ प्रशिक्षण समारोहपूर्वक संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में मछुआ कृषकों को सरकार की योजनाओं और तकनीकी नवाचारों की जानकारी दी गई।

इस अवसर पर जनप्रतिनिधि श्री विवेक चतुर्वेदी, श्री अरविन्द खटीक, श्री स्वप्निल तिवारी, मछुआ समूह एवं समितियों के सदस्य एवं तकनीकी विषय विशेषज्ञ की विशेष उपस्थिति रहीं।

कैरा टेक्नोप्लास्ट प्रा.लि., खरगोन
आपकी समृद्धि
हमारी प्राथमिकता
हमारे यहां पर ड्रिप में फ्लैट और राउण्ड एचडीपीई व स्प्रिंकलर पाईप, एचडीपीई क्वाइल, लपेटा पाईप एवं रेन पाईप वर्जिन एवं उच्च क्वालिटी में बनाये जाते हैं। **सम्पर्क** - निरंजन नगर, कसरावद रोड, खरगोन,
मो. : 7880017028, 7880017021
मई 25

TerraGlebe Farmers Producer Company Limited
TerraGlebe
NIMADFRESH
यूरोप में मिर्च निर्यात (एक्सपोर्ट) करने वाला मध्यप्रदेश का पहला किसान उत्पादक संगठन बना 'टेराग्लेब'
अब उसी की तर्ज पर नाबार्ड से गठित FPO निमाड़फ्रेश FPO रसायन मुक्त मसाले का बना मैन्युफैक्चर
ODOP - मिर्च-खरगोन
जुलाई 26
निमाड़फ्रेश FPO (JV) हरिओम भुरे 8964087240
टेराग्लेब FPO बालकृष्ण पाटीदार 9575524408

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त नर्सरी
ISO 9001 : 2015 सर्टिफाईड
किसान हाईटेक ग्रीनहाऊस नर्सरी
द्वारा पपीता, मिर्च, टमाटर, बैंगन, तरबूज, करेला, पत्तागोभी, फूलगोभी आदि सब्जी के पौधे टेबल स्टेण्ड के ऊपर रखकर तैयार किए जाते हैं
सम्पर्क : 9407361901, 9407361902, 9407361903
सहयोगी प्रतिष्ठान : बागवानी बाजार नर्सरी
जहां पर फलदार, सजावटी व फारेस्टी पौधों की विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध है। **संपर्क : मो. :** 9407853117, 9407853118, 9407853119, **नर्सरी स्थल : ग्राम-सिरलाय, तह.- बड़वाह 451115, जिला-खरगोन (म.प्र.)**
मार्च 25

मध्यभारत की सबसे बड़ी नर्सरी
तिरुपति ग्रीन हाऊस नर्सरी
देश का सबसे बड़ा पौध भंडार औषधीय, फलदार, सजावटी फूलों के पौधे, इनडोर, टिश्यूकल्चर, क्रीपर, बोन्साई, सक्यूलेन्ट्स, केक्टस, हैंगिंग प्लांट, वर्टीकल प्लांट, लकी बैंबू रेंज, फॉरेस्ट्री प्लांट एवं सब्जियों के पौधों की विस्तृत श्रृंखला में
: आपका स्वागत है :
सिरलाय (बड़वाह) मध्यप्रदेश
www. tirupatinursery.com
email : tirupatinursery@gmail.com
मो. : 9479457720/99/63/86/96/16/17/13/31/51
मार्च 2025

कई प्रकार की फसलों के लिए एकमात्र स्वचलित गियर ड्राईव
वरदान
मल्टीक्रॉप पॉवर रीपर
वरदान एग्री सॉल्यूशन्स प्रा.लि.
63, पोलोग्राउण्ड, इन्दौर-452015 (म.प्र.) फोन: 0731-4970600, 6264916090.

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ
व्यक्तिगत क्लासीफाइड
विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-
- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि ▪ बीज ▪ औषधीय फसल
विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक ▪ अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड
विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण जीएसटी 5% अतिरिक्त
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.
कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्राएं, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagatindia
@krishakjagat @krishak_jagat

टेक्नो ज़ेड और फर्टिस डब्ल्यूजी का कमाल, भरपूर फसल से किसान खुशहाल

SML Transforming Agriculture

इंदौर (कृषक जगत)। देश की प्रसिद्ध कम्पनी एसएमएल लि. द्वारा किसानों की फसल की उपज बढ़ाने के लिए दो उत्पादों टेक्नो ज़ेड और फर्टिस डब्ल्यूजी की जोड़ी को पेश किया गया है, जिसका किसानों की ओर से अच्छा प्रतिसाद मिला है, क्योंकि किसानों को इनके प्रयोग से फसल का गुणवत्तायुक्त बेहतर उत्पादन मिला है।

टेक्नो ज़ेड और फर्टिस डब्ल्यूजी की विशेषताएं - कम्पनी के हेड क्रॉप न्यूट्रीशन पोर्टफोलियो मैनेजमेंट श्री अंजनी मनबंश ने टेक्नो ज़ेड ज़िंक और फर्टिस डब्ल्यूजी की विशेषताओं और फायदों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि टेक्नो ज़ेड में ज़िंक और फर्टिस डब्ल्यूजी में सल्फर होने से यह पौधों को ज़रूरी पोषण प्रदान करता है। टेक्नो ज़ेड, ओआरटी तकनीक से निर्मित सूक्ष्मकणों वाला ज़िंक खाद है, जो फसल को लम्बे समय तक ज़िंक उपलब्ध कराता है। फसल की जड़ों द्वारा अधिक अवशोषण किए जाने से फसल की उत्पादकता और गुणवत्ता में वृद्धि के साथ ही दाने में ज़िंक की मात्रा भी अधिक मिलती है। चूँकि यह उत्पाद माइक्रोग्रेन्यूल फार्मुलेशन से बना है, इसलिए इसके इस्तेमाल से मिट्टी में ज़िंक का फसल की पोषक जड़ों की सतह तक समानांतर फैलाव होता है। इसकी अन्य उर्वरकों के साथ मिश्रण में कोई प्रतिस्पर्धा नहीं होती है और फास्फेटिक उर्वरक के साथ स्थिर (फिक्स) नहीं होता है। टेक्नो ज़ेड की खास बात यह है कि इसे किसी भी विधि से खेत में इस्तेमाल किया जा सकता है। यह उत्पाद दोहरे पोषक तत्व युक्त होने से सल्फर की वजह से मिट्टी के पीएच मान में सुधार होता है, जिससे ज़िंक और अन्य पोषक तत्वों का फसल द्वारा अधिक अवशोषण होता है। यह पौधों में वृद्धि नियामक (ऑक्जिन) बनने में भी सहायक होता है। इससे फसल में रोग, कीट प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है। इसकी 4 से 12 किलो/एकड़ (हर भुरकाव के साथ खाद में मिलाकर) प्रयोग करने की अनुशंसा की गई है।

फर्टिस डब्ल्यूजी अन्य पोषक तत्वों को ग्रहण करने में मददगार होने के साथ ही क्षारीय मिट्टी के पीएच में भी सुधार करता है। पौधों की स्वस्थ वृद्धि एवं विकास से उच्च गुणवत्ता वाली ज्यादा पैदावार मिलने से प्रति एकड़ अधिक आमदनी होती है। इसके अलावा यह फसल की भंडारण क्षमता को गुणवत्ता को भी सुनिश्चित करता है, जिससे फसल लम्बे अर्से तक सुरक्षित रहती है। इसकी 6 से 18 किलो/एकड़ (हर भुरकाव के साथ खाद में मिलाकर) प्रयोग करने की अनुशंसा की गई है। टेक्नो ज़ेड और फर्टिस डब्ल्यूजी की जोड़ी खेत में ऐसा कमाल दिखाती है कि भरपूर फसल पाकर किसान खुशहाल नज़र आते हैं।

इफको मुख्यालय नई दिल्ली में प्रबंध निदेशक श्री के. जे. पटेल से मुलाकात करते हुए मध्य प्रदेश इफको के राज्य विपणन प्रबंधक डॉ. डी.के. सोलंकी।

महिंद्रा फार्म मशीनरी ने नया ग्राउंडनट थ्रेशर लॉन्च किया

मुंबई (कृषक जगत)। दुनिया की सबसे बड़ी ट्रैक्टर विनिर्माता और भारत के सबसे बड़े कृषि उपकरण निर्माताओं में से एक, महिंद्रा एंड महिंद्रा ने एक नया मूंगफली थ्रेशर लॉन्च किया है। उपयोगकर्ता के अनुकूल और किफायती डिज़ाइन वाले इस नए मूंगफली थ्रेशर को चलाना आसान है। ट्रैक्टर से चलने वाला यह नया थ्रेशर प्रेसिज़न (सटीक) थ्रेसिंग के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो मूंगफली को उनकी फलियों से ठीक से अलग करता है।

गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के मूंगफली किसानों के लिए उपयुक्त, महिंद्रा का यह नया मूंगफली थ्रेशर आकार में छोटा, लेकिन दक्ष और मज़बूत है। इसका एर्गोनॉमिक डिज़ाइन किसानों के रोज़मर्रा के काम आसानी से करने और मज़दूरों पर निर्भरता कम कर बचत करने में मदद करता है। मूंगफली की फसल की कटाई के लिए सुविधाजनक समय-सारिणी सुनिश्चित करता है, जिससे किसान अपनी सुविधा के अनुरूप कटाई और थ्रेशिंग कर सकते हैं। महिंद्रा का नया मूंगफली थ्रेशर अनाज की गुणवत्ता और नुकसान की वास्तविक समय पर निगरानी की सुविधा प्रदान करता है, ताकि तत्काल हस्तक्षेप किया जा सके और बर्बादी तथा खेत में छूट जाने वाले अवशेष को कम किया जा सके। यह नया थ्रेशर जल्दी कटाई और देर से थ्रेशिंग की जोखिम को कम करने में मदद करता है।

महिंद्रा फार्म इक्विपमेंट बिजनेस की वाइस प्रेसिडेंट (उपाध्यक्ष) और बिज़नेस हेड (व्यापार प्रमुख) - फार्म मशीनरी एवं प्रिसिजन फार्मिंग, डॉ. अनुषा कोथंदरमन ने नए लॉन्च पर अपनी टिप्पणी में कहा, 'महिंद्रा को नया मूंगफली थ्रेशर लॉन्च करते हुए बेहद खुशी हो रही है। यह एक ऐसा उत्पाद है, जिसकी कल्पना मूंगफली किसानों के साथ मिलकर एक ऐसे मशीनीकरण समाधान के लिए की गई है जो समय पर कटाई के लिए सुविधाजनक है, और मूंगफली की फसल की मूल्य श्रृंखला में और वृद्धि करता है। 30 से ज़्यादा थ्रेशरों की हमारी बढ़ती श्रृंखला के साथ, यह लॉन्च हमारे कृषि मशीनरी व्यवसाय के ज़रिये नवोन्मेष और कृषि सशक्तिकरण के हमारे निरंतर प्रयास को दर्शाता है। नया थ्रेशर गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश स्थित विशिष्ट महिंद्रा फार्म मशीनरी आउटलेट और चुनिंदा महिंद्रा ट्रैक्टर डीलरशिप पर खरीदने के लिए उपलब्ध है।'

बायर द्वारा मध्य प्रदेश में रबी मक्का महोत्सव

छोटे किसानों की उपज और आय बढ़ाने की पहल

भोपाल (कृषक जगत)। स्वास्थ्य सेवा और कृषि क्षेत्र में वैश्विक अग्रणी कंपनी बायर ने मध्य प्रदेश के सात प्रमुख जिलों- बैतूल, छिंदवाड़ा, सिवनी, इंदौर, भोपाल, जबलपुर और रतलाम में 'रबी मक्का महोत्सव' की शुरुआत की है। इस महोत्सव का उद्देश्य छोटे किसानों की उपज और आय में वृद्धि करना है।

यह कार्यक्रम ग्रामीण स्तर पर किसान बैठकों के रूप में आयोजित किया जा रहा है, जिसमें किसानों को मक्का फसल की उन्नत तकनीकों, डेकाल्ब (DEKALB) हाइब्रिड किस्मों, और सतत कृषि पद्धतियों की जानकारी दी जा रही है।

प्रमुख विशेषताएँ

- लाइव फील्ड डेमोंस्ट्रेशन, कटाई-मड़ाई और क्रॉप कार्निवल के माध्यम से उपज प्रदर्शन।
- किसानों को आधुनिक फसल प्रबंधन, टिकाऊ खेती तकनीकों पर प्रशिक्षण।
- फार्मराइज (FarmRise) ऐप के QR कोड रिवॉर्ड सिस्टम के जरिये किसानों को पुरस्कार।

इस अवसर पर श्री मोहन बाबू, क्लस्टर कमर्शियल लीड (क्रॉपसाइंस डिवीजन) ने कहा-'बायर का उद्देश्य हर किसान को सही जानकारी, तकनीक और फसल समाधान देकर सशक्त बनाना है। मक्का उत्सव किसानों के करीब रहने और उनकी उपज व आय को बढ़ाने की हमारी निरंतर प्रतिबद्धता का हिस्सा है।'

डेकाल्ब हाइब्रिड्स की विशेषताएँ

- विविध बुवाई परिस्थितियों के अनुकूल, स्थिर और उच्च गुणवत्ता वाले अनाज उत्पादन में सक्षम।
- 65-70 प्रतिशत स्टार्च और 8-9 प्रतिशत प्रोटीन युक्त, जो इथेनॉल और पोल्ट्री फीड उद्योगों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं।

संपर्क

किसान 'रबी मक्का महोत्सव' में भाग लेने या अधिक जानकारी के लिए टोल-फ्री नंबर — 1800-120-4049 (हैलो बायर) पर संपर्क कर सकते हैं।

विलुप्त होते देसी ज्वार बीज को बचाने का जतन

(दिलीप दसौंधी, मंडलेश्वर, कृषक जगत)। कुछ दशक पूर्व तक ग्रामीणों का मुख्य खाद्यान्न देसी ज्वार ही होता था। मेहमानों के आगमन पर ही गेहूं की रोटी बनाई जाती थी। लेकिन समय के साथ खान-पान की शैली में परिवर्तन और अधिक उपज देने वाली अन्य खाद्यान्न फसल का रकबा बढ़ने के कारण देसी ज्वार विलुप्त होने की कगार पर आ गई है। इस खतरे को भांपते हुए ग्राम चिचली तहसील कसरावद जिला खरगोन के प्राकृतिक कृषक श्री संजय शर्मा ने देसी ज्वार के बीज को बचाने का जतन करते हुए भिंड जिले से इसका बीज मंगाकर एक एकड़ से अधिक रकबे में बोया है। ज्वार की कटाई अभी बाकी है। प्राप्त उपज के बाद ही पता चलेगा कि देसी ज्वार बीज को बचाने का उनका यह प्रयास कितना सफल रहा।

श्री शर्मा ने कृषक जगत को बताया कि एक कृषक मित्र से जानकारी मिलने पर लहार जिला भिंड के किसान श्री राजाराम सिंह ठाकुर से 5 किलो देसी ज्वार (स्थानीय भाषा में गारिया ज्वार) का बीज मंगाकर इस वर्ष खरीफ में एक एकड़ से अधिक रकबे में बोया था। अंकुरण के बाद लगातार वर्षा से फसल जल गई और फसल के बीच गैप बढ़ गई। हालांकि ज्वार फसल रोग और कीट मुक्त रही और भुट्टे भी बड़े निकले हैं। इसका भुट्टा यू आकार का निकलता है, जिसका रंग सफ़ेद और दाना बड़ा होता है। इन भुट्टों को देखकर लग रहा है कि इसमें दो प्रकार के देसी बीज मिश्रित हैं। वास्तविकता तो कटाई के बाद ही पता चलेगी। वैसे इन्हें करीब 15 क्विंटल/एकड़ उत्पादन होने का अनुमान है। उल्लेखनीय है कि श्री शर्मा के पास 20 एकड़ ज़मीन है,जिसमें से 5 एकड़ में विगत 6 वर्षों से प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। खरीफ में कपास और सोयाबीन और रबी में चने की खेती प्राकृतिक तरीके से करते हैं। देसी ज्वार बीज को बचाने के लिए पहली बार देसी ज्वार बोई है। तीन वर्ष पूर्व मप्र स्थापना दिवस समारोह में उन्हें जिला मुख्यालय पर प्राकृतिक खेती के लिए सम्मानित भी किया गया था।

भारत में मौसम-आधारित कृषि बीमा सब फसलों पर लागू हो

● शशिकांत त्रिवेदी, वरिष्ठ पत्रकार,
मो.: 9893355391

भारत का कृषि क्षेत्र, जो देश की आधी से अधिक आबादी का पोषण करता है, जलवायु परिवर्तन और बदलते मौसम के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है। राष्ट्रीय इस तरह का बीमा वर्षा, तापमान या आर्द्रता जैसे पूर्व निर्धारित मौसम मापदंडों पर आधारित भुगतान प्रदान करता है। इसे पैरामीट्रिक बीमा भी कहते हैं। इसमें किसानों को नुकसान की भरपाई के लिए कुछ जल्दी मुआवजा मिलने की सम्भावना रहती है। पारंपरिक क्षतिपूर्ति-आधारित मॉडल से अलग, जहां नुकसान मूल्यांकन में 1-2 साल की देरी होती है, पैरामीट्रिक बीमा कुछ दिनों में मोबाइल प्लेटफॉर्म के माध्यम से भुगतान कर सकता है, जैसा केन्या और फिलीपींस में देखा गया है।

देश में खरीफ क्षेत्र के 58 प्रतिशत में अतिरिक्त वर्षा

सन् 2025 में, भारत में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव स्पष्ट हैं। मौसम विभाग की रिपोर्ट के अनुसार, अक्टूबर में असामान्य वर्षा ने मध्य प्रदेश में 71 मिमी तक बारिश दर्ज की, जिससे बाढ़ और फसल क्षति हुई। पूरे देश में खरीफ क्षेत्र के 58 प्रतिशत में अतिरिक्त वर्षा दर्ज हुई, जिससे चावल, मक्का और सोयाबीन जैसी फसलों को नुकसान पहुंचा। अक्टूबर में औसत से अधिक बारिश ने कटाई के निकट फसलों को प्रभावित किया, जिससे 3.2 मिलियन हेक्टेयर भूमि प्रभावित हुई हैं। सन् 2024 के डेटा के आधार पर, 2025 में भी लगभग समान परिस्थितियां हैं। जलवायु परिवर्तन से औसत तापमान 1.5 डिग्री सेंटीग्रेड बढ़ने की संभावना है, जिससे प्रमुख फसलों में 10 प्रतिशत तक उत्पादन हानि हो सकती है।

2024-25 में, बदलते मौसम से 10,000 पशु हानि और लाखों किसानों को नुकसान हुआ।

किसानों की आय प्रभावित

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY) के तहत 78.41 करोड़ आवेदनों को कवर किया गया, जिसमें रू. 1.83 लाख करोड़ क्लेम्स का भुगतान हुआ, लेकिन देरी एक बड़ी समस्या है। अध्ययनों से पता चलता है कि क्लेम सेटलमेंट में 3-14 महीने लगते हैं, जिससे किसानों की आय प्रभावित होती है।

खाद्य मुद्रास्फीति बढ़ रही

भारत में असामान्य मौसम—जैसे बंगाल की खाड़ी में गहरा अवदाब और अरब सागर में डिप्रेशन—फसल चक्र को बाधित कर रहा है। माराठवाड़ा जैसे सूखाग्रस्त क्षेत्रों में बाढ़ से लाखों हेक्टेयर फसलें नष्ट हो रही हैं, जिससे खाद्य मुद्रास्फीति बढ़ रही है। पैरामीट्रिक बीमा इस जोखिम को कम कर सकता है, लेकिन चुनौतियां हैं: अभी भारत में लगभग 30 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में ही मौसम स्टेशन हैं। ऐसी स्थिति में सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) और डिजिटल साक्षरता अभियान आवश्यक हैं। सरकार नवाचार और प्रौद्योगिकी कोष (जिसे फिएट भी कहते हैं) से नवाचार को बढ़ावा दे रही है, जो आर्टिफिशिएल इंटेलीजेंस आधारित बीमा को और ठोस विकल्प बना सकता है।

824.77 करोड़ का एक अलग कोष

हाल ही में कुछ खबरें आई हैं कि नाबार्ड पैरामीट्रिक बीमा पर कुछ संस्थाओं से बातचीत कर रही है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेन्स के इस्तेमाल से वास्तविक समय का डेटा, सेंसर और मौसम स्टेशन से की मदद से मौसम के कारण खेती में हुए नुकसान का वास्तविक आकलन किया जा सकता है। प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीईए) ने इस साल दो फसल बीमा योजनाओं - प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना और पुनर्गठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना को 2025-26 तक एक और वर्ष के लिए बढ़ा दिया और तकनीक के जरिये प्रमुख योजनाओं का लाभ किसानों को देने के लिए रू. 824.77 करोड़ का एक अलग कोष बनाया।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना और पुनर्गठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना को 15वें वित्त आयोग की अवधि के अनुरूप बनाने के लिए बढ़ा दिया गया है। इन पर सन् 2021-22 से 2025-26 तक रू. 69,515.71 करोड़ खर्च होना है। जबकि 2020-21 से 2024-25 के लिए यह खर्च रू. 66,550 करोड़ था ।

कुल मिलाकर, पैरामीट्रिक बीमा कृषि क्षेत्र को जलवायु अनुकूल बनाने का एक क्रांतिकारी कदम है, लेकिन बड़े पैमाने पर अपनाने के लिए नीतिगत समर्थन और किसान शिक्षा जरूरी है। 2025 में, चरम मौसम की बढ़ती घटनाएं इसकी तत्काल आवश्यकता रेखांकित करती हैं, अन्यथा कृषि उत्पादन में 5-10 प्रतिशत की गिरावट से खाद्य सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है।